वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1990-91

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे संस्थान के रूप में की गई है जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्मांड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से संबद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखंड रूप से जुड़ा है, और उसके लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्वबंधुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परंपरा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहां कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है जिसमें शामिल हैं : लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्रकला से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं, अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारंभ में केन्द्र अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित करेगा, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सर्जनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समस्त कार्य में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अंतर्विषयक दोनों प्रकार का होगा। केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

1. कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना;

2. सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना;

3. कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना;

4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विविध परंपरागत तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद/विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना;

5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझ-बूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञानों और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परंपरागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल हैं, के बीच उत्पन्न हो जाता है;

6. भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिए मॉडल तैयार करना;

7. विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना;

8. भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना;

9. कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार साधनों का विकास करना और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर के संबंध में अनुसंधान कार्य करने और उनको मान्यता प्रदान करने के लिए भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य उच्च शिक्षा संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं में अन्योन्याश्रय और कलाओं तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों के बीच अन्योन्याश्रय संबंध, विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण और शहरी तथा लिखित एवं मौखिक परंपराओं के बीच पारस्परिक संबंधों का पता लगाया जाएगा और उनको अभिलिखित तथा प्रस्तुत किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, कला विभाग के संकल्प संख्या एफ. 16-7/86-कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसरण में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास को नई दिल्ली में दिनांक 24 मार्च, 1987 को विधिवत् रूप से गठित व पंजीकृत किया गया था।

1989-90 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के निम्नलिखित न्यासी थे :—

1. श्री राजीव गांधी — न्यास अध्यक्ष
2. श्री रा. वेंकटरामन
3. श्री पी.वी. नरसिंहाराव
4. वित्त मंत्री भारत सरकार (पदेन)
5. श्रीमती पुपुल जयकर
6. श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद
7. श्रीमती एम.एस. सुब्बलक्ष्मी
8. श्री आबिद हुसैन
9. डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन — सदस्य सचिव, न्यास

भारत सरकार के दिनांक 19 मार्च, 1987 के संकल्प संख्या फा. 16-7/86-कला के द्वारा नियुक्त कार्यकारिणी समिति में निम्नलिखित सदस्य थे :—

1. श्री पी.वी. नरसिंहाराव — अध्यक्ष
   न्यास सदस्य
2. वित्त मंत्री
   भारत सरकार (पदेन)
   न्यास सदस्य
3. श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद
   न्यास सदस्य
4. श्री आबिद हुसैन
   न्यास सदस्य
5. श्री पी.सी. एलेक्जेंडर
   पडिज़ारे थलक्कल
   मवेलिकारा, केरल
6. डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन — सदस्य सचिव न्यास

संगठन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए और अपने प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र अपने पांच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है जो संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त होते हुए भी कार्यक्रमों के आयोजनों के मामले में परस्पर जुड़े हुए हैं।

इन्दिरा गांधी कला निधि : इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए बहुविध संग्रहों से सुसज्जित एवं सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसे संबल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक परंपराओं (धरोहर) पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक, (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह और क्षेत्र अध्ययन व्यवस्था है।

इन्दिरा गांधी कला कोश : यह प्रभाग आधारभूत अनुसंधान कार्य करता है। यह दीर्घकालिक कार्यक्रम आरंभ करेगा, जिसमें (क) कला और शिल्प की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा बुनियादी तकनीकी शब्दों का संग्रह और अंतर्विषयक शब्दावलियां, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रंथोंकी श्रृंखला (कलामूलशास्त्र), (ग) भारतीय कलाओं के विषय में समीक्षात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला (कला समालोचन), (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश सम्मिलित होंगे।

इन्दिरा गांधी जनपद संपदा : यह प्रभाग (क) लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री का संग्रह तथा प्रलेखन करेगा, (ख) बहुविध संचार माध्यमों के जरिए प्रस्तुत करेगा, (ग) जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए व्यवस्था करेगा जिससे कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, पारिस्थितिक, कृषि विषयक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार किए जा सकें, (घ) एक बाल रंगशाला, (ङ) एक प्रयोगात्मक रंगशाला, और (च) एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करेगा।

इन्दिरा गांधी कला दर्शन : कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अंतर्विषयक अंतर्विषयात्मक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिए एक मंच की व्यवस्था करता है, इसके भवनों में तीन रंगशालाएं (थियेटर) और बड़ी दीर्घाएं होंगी।

सूत्रधार : अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करता है।

संस्था के अकादमिक प्रभाग अर्थात् कला निधि तथा कला कोश अपना ध्यान प्रमुख रूप से बहुविध प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रह पर लगाएंगे, आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करेंगे, रूप के सिद्धांतों का पता लगाएंगे और पारिभाषिक शब्दावलियों को स्पष्ट करेंगे। वे यह कार्य सिद्धांत और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) और निर्वचन मार्ग के स्तर पर करेंगे। जनपद संपदा और कला दर्शन प्रभाग लोक, देश तथा जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्य तथा जीवन शैली और मौखिक परंपराओं पर ध्यान देंगे। चारों प्रभागों के कार्यक्रम सम्मिलित रूप से कलाओं को उनके जीवन तथा अन्य विषय संबंधी मूल संदर्भों में प्रस्तुत करेंगे।

प्रत्येक प्रभाग में अनुसंधान करने, कार्यक्रम बनाने और अंतिम निष्कर्ष निकालने की रीतियां एक जैसी हैं। हर प्रभाग का कार्य दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक होगा।

वार्षिक रिपोर्ट
1 अप्रैल, 1990 से मार्च, 1991 तक

कार्यकलाप

आलोच्य वर्ष के दौरान प्रत्येक प्रभाग के कार्यक्रमों में और परिष्कार किया गया। परियोजनाओं की रूपरेखा का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया गया और प्रत्येक परियोजना के चाहे वह दीर्घकालीन हो या प्रायोगिक, विशिष्ट मॉड्यूल तैयार किए गए।

पुस्तकालय के कलेवर में मुद्रित पुस्तकों, रेखाचित्रों, लघुचित्रों तथा पांडुलिपियों की अनुलिपियों (रिप्रोग्राफीज), छायाचित्रों, टेपों और वीडियो सामग्री के रूप में अनेक महत्वपूर्ण वृद्धियां की गई। द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत विभिन्न देशों से बहुमूल्य सामग्री प्राप्त हुई। वर्ष के दौरान, प्राप्त सामग्री को प्राप्ति रजिस्टर में दर्ज करने, वर्गीकृत करने और कम्प्यूटरीकृत सूचियां तैयार करने का काम जारी रहा। सॉफ्टवेयर की उपयुक्तता की जांच की गई। पुस्तकालय में देश-विदेश के अनेक महत्वपूर्ण महानुभाव पधारे। इसमें उपलब्ध सामग्री तथा कम्प्यूटरीकृत ग्रंथसूचियों से आकर्षित हो कर विश्व के सभी भागों से गंभीर अध्येता यहां समय-समय पर आते रहे।

केन्द्र में शब्दकोशों के अनुसंधान एवं प्रकाशन, प्राथमिक ग्रंथों के संपादन एवं अनुवाद और महान लेखकों के चुने हुए पत्रों तथा कला इतिहासकारों की समालोचनात्मक कृतियों के प्रकाशन से संबंधित दीर्घकालीन कार्यक्रम वर्ष के दौरान बराबर चलते रहे। छः प्रकाशनों का विमोचन किया गया। इनमें शामिल थीं — आनंद कुमारस्वामी की दो कृतियां और रोमां रोलां, प्रो. सैयद हुसैन नस्र, जे.एम. मेलविले तथा एलिस बोनर की एक-एक कृति। इन सभी प्रकाशनों का व्यापक रूप से स्वागत हुआ।

केन्द्र के कार्यक्रमों ने जनजातीय और ग्रामीण समुदायों की जीवन शैलियों पर ध्यान आकर्षित किया। देश के कुछ विशेष क्षेत्रों के बहु-विषयक अध्ययन की गति भी तेज हुई। आलोच्य वर्ष में, भारत के विभिन्न आर्थिक अंचलों में विशिष्ट क्षेत्र अध्ययन के कार्यक्रम भारतीय सांस्कृतिक घटनाक्रम के अध्ययन के संबंध में केन्द्र द्वारा तैयार किए गए सैद्धान्तिक मॉडल के आधार पर प्रारंभ किए गए। इन कार्यक्रमों में अनेक विश्वविद्यालयों, अनुसंधान, संस्थाओं तथा विख्यात विद्वानों का सहयोग लिया गया। विशेष सांस्कृतिक अंचलों के बहु-विषयक अध्ययन की परियोजनाओं के प्रथम परिणाम अब प्राप्त होने लगे हैं। बहु-भाषी ग्रंथ सूचियां तैयार करने का काम अब समाप्ति की ओर बढ़ रहा है और महत्वपूर्ण स्मारकों के स्थापत्य कलात्मक नक्शे तैयार किए जा चुके हैं।

बच्चों को गंभीर एवं विद्वतापूर्ण अध्ययन के परिणामों से सरल और सुग्राह्य रूप में अवगत कराने के लिए केन्द्र के परिसर में एक पुत्तलिका रंगशाला का निर्माण किया गया है।

'काल' विषय पर चार राष्ट्रीय संगोष्ठियां और एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। लब्धप्रतिष्ठ भौतिक विज्ञानियों, दार्शनिकों, इतिहासकारों, कला इतिहासविदों और कलाकारों ने उक्त अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया जो नवम्बर, 1990 में सम्पन्न हुई। काल प्रदर्शनी लगाने के लिए एक अत्यंत कल्पनाशील ढांचा तैयार किया गया जो पूर्णतः गारे का बना हुआ था। इसी विषय से संबंधित अनेक कार्यक्रम किए गए जहां मंचीय और दृश्य कलाओं में इस विषय को खोजा गया। इन कार्यक्रमों के प्रति विद्वत्समुदाय तथा सामान्य दर्शकों एवं छात्रों की प्रतिक्रिया काफी उत्साहपूर्ण रही।

आलोच्य वर्ष के दौरान केन्द्र ने चीन के साथ संवाद प्रारंभ करने और सोवियत संघ के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार करने के लिए विशेष प्रयत्न किए। केन्द्र के अकादमिक संकाय के सदस्यों को अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों तथा सम्मेलनों में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। केन्द्र को परामर्शदाताओं या शोधकर्ताओं के रूप में अनेक विशिष्ट अध्येताओं तथा विद्वानों की सेवाएं प्राप्त हुई।

प्रत्येक विभाग के कार्यक्रमों का ब्यौरा नीचे दिया गया है:—

I. कला निधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

संदर्भ पुस्तकालय ने फरवरी, 1991 में अपने अस्तित्व का दूसरा वर्ष पूरा किया। आलोच्य वर्ष के दौरान पुस्तकालय ने सभी कलारूपों, लोक साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, धर्म, दर्शन, भाषा, साहित्य, मानव विज्ञान, मानव जाति विज्ञान आदि विषयों से संबंधित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, माइक्रोफिल्म व माइक्रोफिश, फोटोग्राफ, स्लाइडों, फिल्मों, श्रव्य-दृश्य वस्तुओं आदि के संग्रह का काम जारी रखा। पुस्तकालय में विश्वकोशों, ग्रंथसूचियों, प्रारंभिक ग्रंथों, दुर्लभ पुस्तकों और सुनीतिकुमार चटर्जी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, ठाकुर जयदेव सिंह, कृष्ण कृपलानी, नसली एलिस हीरामानेक, लांस डेन प्रभृति विख्यात विद्वानों के व्यक्तिगत संग्रह जैसी सामग्री संगृहीत है।

केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय की एक अनुपम विशेषता है उसका माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश संग्रह। पुस्तकालय ने संस्कृत, अरबी और फारसी की पाण्डुलिपियों के प्रमुख संकलनों की माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश प्रतियां प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयत्न किया है। साथ ही उसने भारत के बड़े पुस्तकालयों में उपलब्ध पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने का एक व्यापक एवं दीर्घकालीन कार्यक्रम हाथ में लिया है। इसका ब्यौरा इसी अध्याय में दिया गया है।

पुस्तकालय शोध छात्रों को भारत भर में और विदेशी पुस्तकालयों में यत्रतत्र उपलब्ध भारतीय सांस्कृतिक धरोहर विषयक प्राथमिक सामग्री तक पहुंचने का अवसर प्रदान करता है।

यहां भारतीय तथा विदेशी संग्रहों में उपलब्ध कला वस्तुओं और सचित्र पाण्डुलिपियों के फोटोग्राफ और स्लाइडें भी विशाल मात्रा में संगृहीत हैं।

पुस्तकालय में संगृहीत सभी प्रकार की सामग्रियों तक एक कम्प्यूटरीकृत कैटलॉग (ग्रंथसूची) के माध्यम से पहुंचा जा सकता है।

नई प्राप्तियां

मुद्रित सामग्री

वर्ष के दौरान पुस्तकालय में 7,800 से भी अधिक ग्रंथ जोड़े गए, जिनमें लांस डेन संग्रह के 5007 ग्रंथ और उपहारस्वरूप प्राप्त 461 खंड शामिल हैं। दुर्लभ ग्रंथ प्राप्त करना इस पुस्तकालय की एक विशेषता है और आलोच्य अवधि में पुस्तकालय ने 124 दुर्लभ पुस्तकें प्राप्त कीं। दक्षिण-पूर्व एशिया विषयक सामग्री प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयत्न किए गए और चीनी भारतीय अध्ययन और रूसी प्राच्यवाद एवं मध्य एशिया विषयक सामग्री इकट्ठी करने की शुरुआत की गई। इसके अलावा, राजगिर (बिहार) के श्री एफ.सी. बेलानी से दुर्लभ पाण्डुलिपियों की जीरोक्स प्रतियों के 72 खंड प्राप्त किए गए।

पुस्तकालय में उच्चस्तर की 369 पत्र-पत्रिकाएं मंगाई जाती हैं जिनमें 472 विदेशी और 197 भारतीय हैं। इस वर्ष जोड़ी गई कुछ महत्वपूर्ण पत्रिकाएं हैं : डायलेक्टिकल एंथ्रोपोलॉजी, ईथ्नो-हिस्टरी, ह्यूमन साइन्स, मैन एंड एनवायरनमेंट, अमेरिकन एंटीक्विटी, आर्किटेक्चरल डिजाइन, थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली, जर्नल ऑफ हिस्टोरिकल ज्योग्राफी, हिस्टोरिकल जर्नल, हिस्टरी एंड थ्योरी, जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी हिस्टरी, जर्नल ऑफ दि इकनोमिक एंड सोशल हिस्टरी ऑफ दि ओरिएंट और साउथईस्ट एशिया रिव्यू।

वर्ष 1990-91 के दौरान प्रकाशनों तथा सूचियों की निम्नलिखित महत्वपूर्ण श्रृंखलाएं जोड़ी गईं :—

1. बोटरेज जुर सुडासीन फोरशुंग (जर्मनी) द्वारा प्रकाशित "इंडियन आर्ट एंड कल्चर" की श्रृंखला के 131 खंड।
2. यूनाइटेड किंगडम से प्राप्त अनुलिपियां :

(क) इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी में उपलब्ध ब्रिटिश रेखाचित्र
(ख) ब्रिटिश म्यूजियम के संग्रहों की सूचियां
(ग) इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी में मौजूद कंपनी रेखाचित्र
(घ) ब्रिटिश लाइब्रेरी और ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में उपलब्ध फारसी पाण्डुलिपियों से लघु-चित्र
(ङ) ब्रिटिश लाइब्रेरी संग्रहों में मौजूद फारसी लघु-चित्र
(च) लीडन विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में मौजूद अरबी पाण्डुलिपियों और नीदरलैंड में उपलब्ध अन्य संग्रहों की सूचियों के चार खण्ड।

माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश

वर्ष के दौरान, इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी एंड रेकार्ड्स लंदन से पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्मों की 87 कुंडलियां (रोल्स), इंटर डॉक्यूमेंटेशन कंपनी लीडन और स्तास बिब्लियोथिक प्रॉशिशर कुलतुरबिस, बर्लिन से 3,700 माइक्रोफिश प्राप्त की गई। इस प्रकार स्तास बिब्लियोथिक से उनके यहां उपलब्ध भारतीय पाण्डुलिपियों की कुल मिलाकर 4,878 माइक्रोफिश प्रतिलिपियां प्राप्त हो चुकी हैं।

श्रव्यदृश्य तथा लेखा चित्रात्मक सामग्री

ब्रिटिश म्यूजियम (लंदन), ऐशमोलियन म्यूजियम (ऑक्सफोर्ड), यूनेस्को का एशियाई सांस्कृतिक केन्द्र (तोकियो) और इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी (लंदन) से कुल मिलाकर 4,026 स्लाइडें प्राप्त हुईं।

बंगाल स्कूल के महान चित्रकार गगनेन्द्रनाथ टैगोर पर बने 16 मि.मि. के वृत्तचित्र के अलावा, कोई 32 नए महत्वपूर्ण एवं संग्रहणीय श्रव्य कैसेट प्राप्त किए गए। डॉ. जोन एम. फ्रिन्ज ने 266 बड़े रिकार्ड भेंट किए और भारत उत्सव कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा 125 रिकार्ड प्रदान किए गए।

माइक्रोफिल्म परियोजनाएं

केन्द्र भारत के विभिन्न पुस्तकालयों में उपलब्ध अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने की एक महत्वपूर्ण परियोजना चला रहा है। इसके अंतर्गत विभिन्न चरणों में पूरा करने के लिए एक दीर्घकालीन कार्यक्रम तैयार किया गया है। आलोच्य वर्ष में कुछ चुने हुए निम्नलिखित पुस्तकालयों में यह कार्य संपन्न किया गया।

राज्य/स्थान	तैयार की गई माइक्रोफिल्म कुण्डलियों की संख्या
केरल	
प्राच्य अनुसंधान संस्थान एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालय, केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेंद्रम	17
श्री एम वर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, त्रिपुनीतुए, केरल	21
महाराष्ट्र	
भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे	471
वैदिक संशोधन मंडल,	

पुणे	186
तमिलनाडु	
गवर्नमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, मद्रास	80
तंजावुर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजावुर	29
उत्तर प्रदेश	
सरस्वती भवन लाइब्रेरी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	225
	1029

वर्ष के अंत तक पुस्तकालय में लगभग 12,34,800 पृष्ठों की 1,029 माइक्रोफिल्म कुण्डलियां प्राप्त हो चुकी थीं। इनमें से प्रत्येक की भलीभांति जांच की जा चुकी है। इन कुण्डलियों में समाविष्ट पाण्डुलिपियों के सूचक (इंडेक्स) बनाने का काम बाकायदा शुरू हो चुका है। इसके अलावा, कुल मिलाकर लगभग 1,70,400 पृष्ठों के दुर्लभ ग्रंथों की माइक्रोफिल्में केन्द्र में ही तैयार की गईं। पुस्तकालय में एक अनुलिपि एकक (रिप्रोग्राफी यूनिट) है जो आधुनिक उपस्कर और प्रशिक्षित जनशक्ति से सुसज्जित है। वर्ष के दौरान, निम्नलिखित संस्थाओं में उपलब्ध पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने के लिए व्यवहार्यता अध्ययन का कार्य शुरू किया गया :—

1.	भारत इतिहास संशोधन मंडल, पुणे	(महाराष्ट्र)
2.	आनंद आश्रम संस्था, पुणे	(महाराष्ट्र)
3.	मूरु सविर मठ, हुबली	(कर्नाटक)
4.	केलादि शोध संस्थान, केलादि	(कर्नाटक)
5.	केरल राज्य अभिलेखागार, त्रिवेंद्रम	(केरल)

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

भारत सरकार के विभिन्न द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत, केन्द्र के कला निधि प्रभाग को विभिन्न विदेशी संस्थाओं से अनुलिपिक सामग्री, पुस्तकें, सूचियां, चित्र पोस्टकार्ड और रंगीन स्लाइडें प्राप्त होती हैं। बदले में केन्द्र ऐसी अनेक संस्थाओं से प्राप्त हुई मांगों की पूरा करता है।

वर्ष 1990-91 में पुस्तकालय को निम्नलिखित सामग्री प्राप्त हुई :—

1.	जापान	: जापानी कला, स्थापत्य, चित्रकला तथा बागवानी से संबंधित 15 प्रकाशन।
2.	कोरिया	: संग्रहालय अध्ययन पर 2 प्रकाशन।
3.	नार्वे	: नार्वेजियन तकनीकी विश्वविद्यालय नार्डनजेल्डस्ये के पश्चिम नार्वे व्यावहारिक कला संग्रहालय के 23 प्रकाशन।
4.	पाकिस्तान	: लाहौर संग्रहालय में उपलब्ध चित्रकारियों की सूचियों वाले 11 प्रकाशन और लाहौर संग्रहालय में संगृहीत सिक्कों की सूची।
5.	स्पेन	: राष्ट्रीय पुरातत्व संग्रहालय, माद्रिद से 5 प्रकाशन
6.	संयुक्त राज्य अमेरिका	: 4 प्रकाशन और बोस्टन स्थित ललित कला संग्रहालय की दीपिका (हैंडबुक)

तकनीकी एंड कम्प्यूटर कार्य

वर्ष के दौरान 8,104 खंडों के संबंध में प्राप्ति संख्या दर्ज करने, उनको वर्गीकृत व सूचीबद्ध करने और डेटा इनपुटशीट भरने आदि का काम पूरा किया गया। पहले 25,415 खंडों के संबंध में यह कार्य पूरा हो चुका था, इसलिए अब तक कुल मिलाकर 33,519 खंडों का कार्य संपन्न हो चुका है। आलोच्य अवधि में कुल मिलाकर 7,191 अभिलेखों को कम्प्यूटर प्रणाली में दाखिल किया गया।

जिल्दबंदी

वर्ष के दौरान 5,371 खंडों की जिल्दबंदी की गई। इस प्रकार अब तक जिल्दबंद किए गए खंडों की संख्या कुल मिलाकर 13,229 हो गई।

ग्रंथसूची

केन्द्र के विभिन्न प्रभागों की अनुसंधान परियोजनाओं में कार्यरत विद्वानों तथा कर्मचारियों को सहायता देने के लिए 8,100 पुस्तकों तथा लेखों के बारे में ग्रंथसूची संबंधी सूचना निम्नलिखित परियोजनाओं के संबंध में संकलित की गई :—

ब्रज-नाथद्वारा ग्रंथसूची
संथाल साहित्य की खोज
सुलेख साहित्य की खोज
मुक्कुवर ग्रंथसूची
बृहदीश्वर ग्रंथसूची
पुतलिका साहित्य की खोज
वासुदेवशरण अग्रवाल

कार्यशालाएं, सम्मेलन आदि

कार्यकुशलता के स्तर को ऊंचा करने और विचारों के आदान-प्रदान के लिए केन्द्र में डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन के मार्गदर्शन में 8-9 जून, 1990 को "सांस्कृतिक स्रोत सूचना एवं बहु-माध्यमिक प्रलेखन" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, एन.सी.एस.टी. (बंबई), राष्ट्रीय संग्रहालय (दिल्ली), सी-डॉट, (दिल्ली) और दूरदर्शन (दिल्ली) से कोई 22 विद्वानों, विशेषज्ञों तथा शिक्षाविदों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

सदस्यता

संदर्भ पुस्तकालय के अस्तित्व के दूसरे वर्ष में बहुत से विख्यात विद्वानों ने इसकी सदस्यता ग्रहण की।

संस्थाओं की सदस्यता

सूचना के आदान-प्रदान के लिए देश-विदेश में स्थित विभिन्न संस्थाओं में परस्पर घनिष्ठ सहयोग होना आवश्यक है। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए केन्द्र प्रमुख पुस्तकालयों के साथ सक्रिय संपर्क रखता है। वर्ष 1990-91 में संदर्भ पुस्तकालय ने निम्नलिखित संस्थाओं की संस्थागत सदस्यता ग्रहण की :—

1. पुस्तकालय संघों का अंतर्राष्ट्रीय परिसंघ (इफ्ला), हेग (नीदरलैंड)।
2. डान्स नोटेशन ब्यूरो, नृत्य विभाग, ओहियो राज्य विश्वविद्यालय, कॉलंबस, ओहियो (संयुक्त राज्य अमेरिका)।
3. डान्स नोटेशन ब्यूरो, न्यूयार्क (संयुक्त राज्य अमेरिका)।
4. हांगकांग मंचनीय कला अकादमी (हांगकांग)।

5. नृत्य अनुसंधान कांग्रेस, नृत्य एवं शिक्षा विभाग, न्यूयार्क विश्वविद्यालय, न्यूयार्क (संयुक्त राज्य अमेरिका)
6. माइक्रोग्राफिक कांग्रेस (भारत), नई दिल्ली।

सुविधाएं तथा सेवाएं

संदर्भ पुस्तकालय का उपयोग करने वाले व्यक्तियों को निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करने के लिए आधारभूत सुविधाएं विकसित की गई हैं :—

1. पुस्तकें, पत्रिकाओं, आदि का कुछ समय के लिए अंतरपुस्तकालयिक आदान-प्रदान।
2. जीरोक्स प्रतियां तैयार करना।
3. माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश पढ़ना तथा फोटोप्रति तैयार करना।
4. कम्प्यूटरीकृत सूची।

आगंतुक महानुभाव

आलोच्य वर्ष के दौरान संदर्भ पुस्तकालय में कई विशिष्ट व्यक्ति एवं विख्यात विद्वान पधारे। उनमें से कुछ थे :—

क्र.सं.	नाम	आगमन का महीना
1.	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष और उनके साथ कार्यकारिणी के अन्य सदस्य	अप्रैल, 1990
2.	श्री राजीव गांधी, न्यास के अध्यक्ष और उनके साथ उक्त न्यास के अन्य सदस्य	अप्रैल, 1990
3.	प्रो. फ्रिस्स स्टाल, दर्शनशास्त्र के आचार्य, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका	मई, 1990
4.	श्री गिरिलाल जैन, प्रख्यात पत्रकार, नई दिल्ली	मई, 1990
5.	प्रो. होवार्ड बेसर, पुस्तकालय विज्ञान विभाग, पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका	जुलाई, 1990
6.	डॉ. आर.एम. छतबार, तंजानिया	जुलाई, 1990
7.	डॉ. एस. सुगीत, राष्ट्रीय मानव जाति विज्ञान संग्रहालय, ओसाका, जापान	जुलाई, 1990
8.	महामहिम तारिक चौधरी, उच्चायुक्त, बंगलादेश	जुलाई, 1990
9.	उन देशों (आस्ट्रिया, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, बुलगारिया, कनाडा, चीन, चिली, चेकोस्लोवाकिया, मिस्र, फ्रांस, जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य, इंडोनेशिया, जापान, कोरिया, मालदीव, मेडागास्कर, नीदरलैंड, श्रीलंका, तुर्की, सोवियत संघ, यूनाइटेड किंगडम और वियतनाम) के 36 प्रतिनिधि जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय पुत्तलिका उत्सव में भाग लिया	सितम्बर, 1990
10.	श्री इब्राहिम अहमद, मालदीव मंचनीय कला अकादमी, माले, मालदीव गणराज्य	नवम्बर, 1990
11.	प्रो. जी.डी. सोन्थाइमर, दक्षिण-पूर्व एशिया संस्थान, हाइडलबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी	नवम्बर, 1990
12.	प्रो. सैयद हुसैन नस्र, जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय, वाशिंगटन, संयुक्त राज्य अमेरिका	नवम्बर, 1990
13.	डॉ. एम.पी. कुमारस्वामी, संयुक्त राज्य अमेरिका	नवम्बर, 1990
14.	प्रो. एम.वी. माथुर, उपकुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	नवम्बर, 1990
15.	श्री केनेथ कूपर, मुख्य कार्यपालक, ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन	दिसम्बर, 1990
16.	श्री ग्राहम शॉ, उप निदेशक, ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन	दिसम्बर, 1990
17.	प्रो. रोबर्ट गोल्डमैन, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, संयुक्त राज्य अमेरिका	दिसम्बर, 1990
18.	कु. हेन्नाट हार्ट, कर्न संस्थान पुस्तकालय, नीदरलैंड	जनवरी, 1991

19.	डॉ. डी.ए. ख्वालो, क्यूरेटर भारतीय विभाग, विक्टोरिया व एलबर्ट म्यूजियम, लंदन	जनवरी, 1991
20.	श्री बी.जी. देशमुख, भूतपूर्व मंत्रिमंडल सचिव, भारत सरकार	फरवरी, 1991
21.	श्री रोमेश भंडारी, भूतपूर्व विदेश सचिव एवं उपराज्यपाल, दिल्ली	फरवरी, 1991
22.	श्री राजाराम शास्त्री, काशी विद्यापीठ, वाराणसी	फरवरी, 1991
23.	श्री एस.के. मिश्र, भारत के प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव	फरवरी, 1991
24.	श्री आर.के. अहूजा, सचिव, संघ लोक सेवा आयोग	फरवरी, 1991
25.	श्री एस.आर. कोल्हाटकर, सलाहकार (शिक्षा) योजना आयोग, नई दिल्ली	फरवरी, 1991

अनुदान

कलानिधि प्रभाग को अनुलिपिकरण एवं प्रलेखन कार्यक्रम के लिए जापान से सांस्कृतिक सहायता और इन्टेक (यू.के.) तथा फोर्ड फाउंडेशन से अनुदान प्राप्त हुए। इसके अलावा, कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए यूनेस्को से और व्यवहार्यता अध्ययनों के लिए यू.एन.डी.पी. से वित्तीय सहायता मिली।

दौरे

सम्मेलन/संगोष्ठी/कार्यशाला/भाषण के लिए

अपने स्टाफ के सदस्यों को अनुलिपिकला, सूचना विज्ञान तथा तत्संबंधी अन्य विषयों में नवीनतम प्रवृत्तियों से अवगत कराने के लिए केन्द्र सदा प्रयत्नशील रहता है। इसी उद्देश्य से, केन्द्र के कर्मिकों को विभिन्न सम्मेलनों/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं आदि में भाग लेने के लिए भेजा जाता है। इस वर्ष का तत्संबंधी ब्योरा इस प्रकार है:—

(क) विदेश में

नाम	संस्थान/देश	प्रयोजन	अवधि
श्री ए.पी. गखड़	राष्ट्रीय कला पुस्तकालय, विक्टोरिया एवं एलबर्ट म्यूजियम, लंदन (यू.के.) ब्रिटिश लाइब्रेरी (प्राच्य संग्रह) इंडिया आफिस लाइब्रेरी एंड रेकार्ड्स, लंदन बोडलीयन लाइब्रेरी, ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय लाइब्रेरी, कैम्ब्रिज	बहु-माध्यमिक प्रलेखन में विशेष (चार्ल्स वालेस इंडिया ट्रस्ट, लंदन (यू.के.) द्वारा वित्तपोषित)	21 मई से 30 जून, 1990

(ख) भारत में

भाग लेने वाले का नाम	प्रयोजन और स्थान का नाम	महीना
1. डॉ. टी.ए.वी. मूर्ति	प्रशासनिक स्टाफ कालेज में दक्षिण क्षेत्र के व्यावसायिक पुस्तकाध्यक्षों के लिए भाषण दिया	मई, 1990

2. डॉ. टी.ए.वी. मूर्ति	'सांस्कृतिक स्रोत सूचना तथा प्रलेखन' विषयक कार्यशाला में भाग लिया	जून, 1990
3. डॉ. टी.ए.वी. मूर्ति श्री ए.पी. गरुड़	विदेश संचार निगम, नई दिल्ली में "नई दिल्ली में लाइन पर सूचना की खोज" विषयक संगोष्ठी में उपस्थित हुए	जुलाई, 1990
4. डॉ. टी.ए.वी. मूर्ति	केन्द्र के सूत्रधार प्रभाग द्वारा आयोजित 'बीमा' विषयक एक-दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया	सितंबर, 1990
5. श्री परमानंद	सी.डी.एस./आईसिस, डेसीडॉक (दिल्ली) में आयोजित एक कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया	8-21 अगस्त, 1991
6. श्री वाई.एन. शर्मा	राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में अभिलेखागारीय प्रशासन संबंधी एक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम में भाग लिया	फरवरी से मार्च, 1991

(ग) कार्यालय में

क्रम सं.	नाम	प्रशिक्षण क्षेत्र	अवधि
1.	कु. राधा बनर्जी	कंप्यूटर आधारित ग्रंथ सूचियों में डेटा भरना	एक सप्ताह
2.	कु. सपना शर्मा		जून, 1990
3.	कु. किरण चड्ढा		

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक

कला निधि (ख) प्रभाग की मुख्य जिम्मेदारी है : अन्य सभी प्रभागों की कंप्यूटरीकरण संबंधी आवश्यकताओं का पता लगाना, सूचना प्रणाली का डिजाइन विकास करना, कंप्यूटर प्रणाली का रखरखाव करना व उसे चालू रखना और उपयोगकर्ताओं को प्रशिक्षित करना। इस प्रभाग को राष्ट्रीय सूचना केन्द्र से भरपूर सहयोग मिलता रहा है। इसके कार्यक्रम आगे इस प्रकार विभाजित हैं :—

1. हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर को प्राप्त करना और उसे चालू करना
2. डेटाबेस का विकास करना
3. सांस्कृतिक स्रोतों के परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन के लिए राष्ट्रीय सुविधा की स्थापना करना
4. अनुसंधान तथा विकास की परियोजनाएं
5. जनशक्ति प्रशिक्षण।

1. हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर को प्राप्त करना और उसे चालू करना

केन्द्र में स्थापित हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर का ब्यौरा पिछली रिपोर्ट में दिया गया था। उनकी वृद्धि, वितरण और उपयोग का ब्यौरा नीचे दिया गया है :—

(क) बंगला सं. 3 राजेन्द्र प्रसाद मार्ग पर स्थित कंप्यूटर केन्द्र

राजेन्द्र प्रसाद मार्ग पर स्थित बंगला सं. 3 में अक्तूबर, 1990 में एक कंप्यूटर कक्ष स्थापित किया गया। वहां 'वर्ड प्रोसेसिंग' कार्य के लिए प्रिंटर के साथ एक पीसी/एक्स टी प्रणाली स्थापित की गई और उसे चालू किया गया। इस प्रणाली का उपयोग करने के लिए कार्मिकों को प्रशिक्षण भी दिया गया।

(ख) अधिकारियों के कमरों में कंप्यूटर

केन्द्र के विभिन्न प्रभागों में अनेक अधिकारियों के कार्यालयों में 'प्रिंटरों' सहित पी.सी. प्रणालियां स्थापित तथा चालू की गईं और कर्मचारियों को इनका उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

2. डेटाबेस का विकास

पिछली रिपोर्ट में उल्लिखित इन डेटाबेसों में और अधिक सूचना संगृहीत करने का कार्य वर्ष 1990-91 के दौरान खासतौर से निम्नलिखित क्षेत्रों में चालू रहा :—

(क) सूचियों की संघ सूची (कैटकैट)

इस डेटाबेस से प्रकाशित/अप्रकाशित हजारों सूचियों (कैटलॉग) के बारे में जानकारी मिलती है। एक सौ से अधिक सूचियों के बारे में जानकारी कंप्यूटर में भरी गई। विषय, भाषा, सूचीकर्ता का नाम आदि के अनुसार सूचना पुनः प्राप्त करने के लिए प्राप्ति बिंदुओं की और व्यवस्था की गई।

(ख) पांडुलिपियां (मैनुस)

अधिक वर्णनात्मक सूचना जोड़ी गई। अब तक लगभग 4,700 पांडुलिपियों का, जिन में गीतगोविंद, मेघदूत और नाट्यशास्त्र शामिल हैं, कंप्यूटरीकरण किया जा चुका है। कलामूलशास्त्र श्रृंखला में शामिल किए गए अन्य ग्रंथों के बारे में वर्णनात्मक सूचना कंप्यूटर में बराबर भरी जा रही है। यह सूचना कलामूलशास्त्र की आधारभूत ग्रंथ श्रृंखला की योजना के अंतर्गत तैयार किए जाने वाले समीक्षात्मक संस्करणों के लिए पांडुलिपियों का परस्पर भेद दर्शाने हेतु आधार का काम देगी।

(ग) कला कोश पारिभाषिक शब्द (केकेटर्म)

कलातत्व कोश की परियोजना के लिए डेटाबेस विकसित कर लिया गया है। वर्ष के दौरान, 2000 से भी अधिक पारिभाषिक शब्दों के बारे में वर्णनात्मक सूचना रोमन तथा देवनागरी लिपियों में कंप्यूटरीकृत की गई है। इससे अध्येताओं को प्रत्येक पारिभाषिक शब्द के लिए पाठ ग्रंथ संबंधी व्यापक संदर्भ तैयार करने और भिन्न-भिन्न पाठों/ग्रंथों में उद्धरणों तथा पारिभाषिक शब्दों के ग्रंथसूची संबंधी संदर्भों को सत्यापित करने में सहायता मिलेगी।

(घ) पुस्तकालय प्रबंध सूचना प्रणाली (लमिस)

आलोच्य वर्ष में 10,000 से भी अधिक पुस्तकों के बारे में सूची (कैटलॉग) संबंधी सूचना को कंप्यूटरबद्ध किया गया।

(ङ) ग्रंथसूची

ब्रज-नाथद्वारा, वासुदेवशरण अग्रवाल, संथाल परियोजना जैसी पहले से चल रही विभिन्न परियोजनाओं से संबंधित 5,000 से भी अधिक संदर्भों (प्रबंध, पुस्तकें, पत्रिकाएं, लेख आदि) के बारे में ग्रंथसूची संबंधी सूचना को कंप्यूटर में भरा गया। इस क्षेत्र में कार्यरत अध्येताओं के तत्काल संदर्भ के लिए रिपोर्टें तैयार की गईं।

(च) कोश निर्माण (थिस)

यह डेटाबेस जनपद संपदा प्रभाग के कार्यक्रमों के लिए विकसित किया गया है। कुछ जनजातीय भाषाओं तथा बोलियों में प्रचलित महत्वपूर्ण शब्दों को इस उद्देश्य से कंप्यूटर में भरा जाता है ताकि पंच महाभूतों — पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश — से संबंधित सवर्गीय शब्दों का पता लगाया जा सके। 2,000 से अधिक शब्दों को भरा जा चुका है। जब यह डेटाबेस तैयार हो जाएगा तो यह जनजातीय समुदायों में मानव एवं प्रकृति के परस्पर संबंध का पता लगाने के लिए अति उपयोगी साधन सिद्ध होगा।

(छ) माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश

इस डेटाबेस में पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्मों/माइक्रोफिशों के बारे में संपूर्ण जानकारी रखी जाती है। 1,000 से अधिक प्रविष्टियों को कंप्यूटरीकृत किया गया है।

(ज) प्रशासनिक तथा वित्तीय संवीक्षा

वेतन पर्चियां तथा अन्य वित्तीय रिपोर्टें तैयार करने और आय नकदी तथा बैंक संबंधी दैनिक लेनदेन का हिसाब रखने का काम कंप्यूटर की सहायता से किया जा रहा है।

3. सांस्कृतिक स्रोतों के परस्पर-संबंधित बहु-माध्यमिक प्रलेखन के लिए एक राष्ट्रीय सुविधा स्थापित करना

बहु-माध्यमिक डेटाबेसों के विकास हेतु प्रणाली विश्लेषण अध्ययन पर एक रिपोर्ट तैयार करने के लिए यू.एन.डी.पी. ने वित्तीय सहायता दी थी। इस रिपोर्ट को तैयार करने के लिए यू.एन.डी.पी. के तीन परामर्शदाता नियुक्त किए गए थे। उनकी रिपोर्ट, परियोजना की रूपरेखा और परियोजना प्रलेख के साथ, केन्द्र में इस सुविधा की स्थापना हेतु वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए भारत सरकार के माध्यम से यू.एन.डी.पी. के पास भेजी जाएगी।

यू.एन.डी.पी. के दो विशेषज्ञों अर्थात् फ्रिट्ज़बर्ग विश्वविद्यालय के होकार्ड घेसर और राष्ट्रीय मानव जाति विज्ञान संग्रहालय, ओसाका के डा. एस. सुगीत को केन्द्र में प्रलेखन की भावी योजनाओं पर विचार-विमर्श करने के लिए जुलाई, 1990 में (एक सप्ताह के लिए) आमंत्रित किया गया था।

यू.एन.डी.पी. परामर्शदाताओं में से एक डॉ बी.सी. वैले को 6 से 10 अगस्त 1990 तक डलास (संयुक्त राज्य अमेरिका) में कंप्यूटर ग्राफिक्स तथा इंटरएक्टिव तकनीकों पर आयोजित 17वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में केन्द्र की ओर से भाग लेने के लिए भेजा गया। उन्होंने कैलिफोर्निया स्थित बर्कले विश्वविद्यालय और सैन फ्रांसिस्को स्थित एशियाई कला संग्रहालय का भी दौरा किया।

4. अनुसंधान तथा विकास परियोजनाएं

(क) डेटाबेस के लिए यूजर-इंटरफेस

एक समेकित बहुमाध्यमिक प्रबंध सूचना प्रणाली विकसित करने के दीर्घकालीन उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, पांडुलिपियों, सूचियों की सूची, कलाकोश पारिभाषिक शब्दों, दृश्य सामग्री और श्रव्य सामग्री पर डेटाबेसों के अतिरिक्त, प्रश्न तथा रिपोर्ट तैयार करने के लिए स्क्रीन आधारित मैनुस के साथ परस्पर सक्रिय यूजर फ्रेंडली इंटरफेस के साथ-साथ निम्नलिखित उपयोग रूपांकित और विकसित किए गए। इनमें शामिल हैं बहुभाषी कोश निर्माण, एम एफ एस/एम एफ एम सूचना, दौरा रिपोर्ट, संसाधन संपन्न व्यक्ति और पत्र-व्यवहार/फाइल संवीक्षा।

डेटा दर्ज/सही करने और प्रश्न तथा रिपोर्ट तैयार करने के कार्य में उपयोगकर्ताओं को सहायता देने के लिए सभी उपयोगों के संबंध में कार्यान्वयन दीपिकाएं तैयार की गई थीं।

30 अप्रैल, 1990 को, विज्ञान भवन एनेक्सी में स्थापित एक पी प्रणाली पर और सैंट्रल विस्टा मेस में स्थापित सुपर गोल्ड/एटी प्रणाली पर विकसित किए गए सभी डेटा बेसों का इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के अध्यक्ष तथा सदस्यों के सामने प्रदर्शन किया गया।

(ख) विदुर : डेस्क टॉप पब्लिशिंग प्रणाली

देवनागरी और रोमन लिपियों सहित 'विदुर' डीटीपी प्रणाली के विकास का पहला चरण पूरा किया गया और यह प्रणाली

चालू की गई। ध्वनिसूचक चिन्हों के साथ रोमन, बंगला, तमिल, उड़िया लिपियों को शामिल करने के लिए आगे और विकास कार्य हो रहा है।

(ग) गीतगोविंद पर बहु-माध्यमिक परियोजना

विकास कार्य प्रारंभ करने के लिए सर्वप्रथम एक संकल्पनात्मक डिजाइन तैयार करने की आवश्यकता होती है। संकल्पनात्मक रूपरेखा तैयार करने में सहायता प्राप्त करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका से श्री रंजीत मकुनी को केन्द्र में आमंत्रित किया गया और उनकी सहायता से गीतगोविंद की परियोजना की संकल्पनात्मक रूपरेखा तैयार की गई। इस संबंध में एक रिपोर्ट भी तैयार की गई है। इस विकास कार्य के लिए, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर की समाकृति को अंतिम रूप दिया जा चुका है। विकास कार्य को शीघ्रातिशीघ्र शुरू करने के लिए इस प्रणाली को प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। पुस्तकालय सूचना प्रणाली और प्रकाशीय भंडारण एवं पुन: प्राप्ति प्रणाली (ऑप्टिकल स्टोरेज एंड रिट्रीवल सिस्टम), जिस में मूलपाठ विषयक तथा चित्रात्मक डेटा का समन्वय शामिल है, के कार्य का प्रदर्शन 11 अप्रैल 1990 को हुई कार्यकारिणी समिति की बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों के सम्मुख सफलतापूर्वक किया गया।

5. जनशक्ति प्रशिक्षण

आलोच्य अवधि में बीस से अधिक व्यक्तियों को अपने काम में कंप्यूटर का इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण दिया गया। केन्द्र के कार्मिकों को नवीनतम प्रौद्योगिकी और कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में उसके उपयोग से सुपरिचित कराने के लिए नियमित भाषण आयोजित किए गए।

"कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में प्रलेखन की विधियां तथा पद्धतियां" विषय पर यूनेस्को के तत्वावधान में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसकी संपूर्ण रिपोर्ट तैयार करके यूनेस्को को भेजी गई।

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार

कला निधि प्रभाग का तीसरा अनुभाग है — सांस्कृतिक अभिलेखागार। यह अनुभाग उन विद्वानों तथा कलाकारों के व्यक्तिगत संग्रहों को इकट्ठा करता है, उनकी सूचियां बनाता है, वर्गीकरण करता है और प्रदर्शित करता है, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन किसी कला विशेष को समर्पित किया है या विषय विशेष से संबंधित सामग्री का पर्याप्त संग्रह किया है। गत वर्ष का महत्वपूर्ण कार्य था उन्नीसवीं शताब्दी के प्रख्यात फोटोग्राफर राजा लाला दीनदयाल के छायाचित्रों के संग्रह को प्राप्त करना। वर्ष 1990-91 के दौरान, सांस्कृतिक अभिलेखागार के कार्यकलाप मुख्य रूप से निम्नलिखित विषयों पर केन्द्रित रहे :—

1. पहले प्राप्त की गई सामग्री को दर्ज करना, उसकी सूचियां बनाना और उसे सुरक्षित रखना
2. व्यक्तिगत संग्रहों का अर्जन
3. देश के विख्यात कलाकारों की प्रलेखन परियोजनाएं

1. पहले प्राप्त की गई सामग्री को दर्ज करना, उसकी सूचियां बनाना और उसे सुरक्षित रखना

(क) राजा लाला दीनदयाल संग्रह : राजा लाला दीनदयाल के फोटोग्राफों तथा ग्लासनिगेटिवों के इंडेक्स तथा कैटालॉग बनाने का काम सुव्यवस्थित रूप से किया गया। चित्र बनाने की सामग्री को सुलभ बनाने के लिए उसकी फोटो प्रतियां तैयार की गई। एक प्रदर्शनी आयोजित करने और उनके संग्रह पर आधारित एक पुस्तक तैयार करने के लिए प्रारंभिक कार्य का श्रीगणेश किया गया।

(ख) हेनरी कारटिएर-ब्रेस्सों संग्रह : कारटिएर-ब्रेस्सों संग्रह को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक उपचार किया गया। उनके छायाचित्रों के मुद्रणों की एक प्रदर्शनी 1991 में लगाने का प्रस्ताव है।

2. व्यक्तिगत संग्रहों का अर्जन

वास्तु/शिल्प

लांस डेन संग्रह : श्री लांस डेन नामक एक प्रसिद्ध विद्वान, संग्रहकर्ता तथा यशस्वी फोटोग्राफर ने 998 कला वस्तुओं को भेंट किया है। विश्व के बड़े-बड़े संग्रहालयों में सुरक्षित उनकी कलावस्तुओं की पारदर्शियां तथा उनके फोटोग्राफ प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है। उनके सिक्कों का प्रलेखन कार्य विश्व में अपने ढंग का एक अकेला महत्वपूर्ण प्रयास है।

3. विख्यात कलाकारों की प्रलेखन परियोजनाएं

इस कार्यक्रम के अंतर्गत सांस्कृतिक अभिलेखागार ने वयोवृद्ध गुरूओं तथा कुछ दुर्लभ कलारूपों की ऑडियो फिल्में तैयार की हैं।

(क) सोज व सलाम

सोज की वाणी : यह एक तरह का धार्मिक संगीत है जो हिंदुस्तानी रागों पर आधारित है और इमाम हुसैन की शहादत इसका विषय है। इसका श्रव्य रूप में प्रलेखन मुख्यरूप से सितंबर 1990 में तीन मूर्ति भवन में आयोजित कार्यक्रम के दौरान किया गया था। इस कार्यक्रम में जिन कलाकारों ने भाग लिया था वे इस कला रूप के लिए विख्यात उत्तर प्रदेश के विभिन्न कस्बों के थे, जैसे बिलग्राम, अलीगढ़, अमरोहा, रामपुर और लखनऊ।

(ख) श्रीमती कलामंडलम् कल्याणिकुट्टी अम्मा द्वारा मोहिनीअट्टम प्रस्तुति

श्रीमती कल्याणिकुट्टी अम्मा मोहिनीअट्टम नृत्य की एक पारंपरिक शैली की एक विख्यात कलाकार हैं। उनके मोहिनीअट्टम की कुछ प्रस्तुतियों की बारीकी से वीडियो रिकार्डिंग की गई। इसी प्रकार, उनके नृत्त एवं अभिनय का भी पूर्णरूप से प्रलेखन किया, जिस में उनका छः घंटे का कार्यक्रम रिकार्ड किया गया।

(ग) तिब्बती मठ के लामाओं द्वारा छम नृत्य

छम नृत्य बौद्ध मठों के लामाओं की धार्मिक उपासनाओं तथा कलात्मक अभिव्यक्तियों के दुर्लभ सम्मिश्रण होते हैं। मैसूर के ताशी लुम्पो मठ और अरूणाचल प्रदेश के तावांग मठ के लामाओं द्वारा प्रस्तुत छम नृत्यों के वीडियो कैसेट तैयार किए गए। इस पांच घंटे की वीडियो रिकार्डिंग में इन नृत्यों का ही ब्यौरा नहीं दिया गया है बल्कि इस नृत्य शैली में प्रयुक्त वाद्य यंत्रों तथा उसके अन्य महत्वपूर्ण पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है।

(घ) भरत-नाट्यम की पंडनल्लूर परंपरा का गुरू सुब्बाराय पिल्लै द्वारा प्रदर्शन

गुरू सुब्बाराय पिल्लै भरत-नाट्यम नृत्य शैली के वरिष्ठ गुरूओं में से एक हैं, और विशिष्ट रूप से भरत-नाट्यम की एक प्रमुख शैली पंडनल्लूर परंपरा को जीवित रखने वाले आज एकमात्र गुरू हैं। गुरू सुब्बाराय का प्रदर्शन कुमारी अलरमेल वल्ली द्वारा किया गया, जो आज देश में भरत-नाट्यम की एक अग्रणी नृत्यांगना हैं। इस वीडियो प्रलेख में 12 घंटे की रेकार्डिंग शामिल है जिस में भरत-नाट्यम के नृत्य और अभिनय दोनों तत्वों से संबंधित आंगिक हाव-भाव के सभी पक्षों को दर्शाया गया है।

इस के अतिरिक्त, श्रीमती माणिक्यम्मा शास्त्रि और गुरू अम्मानूर माधव चाकियार की पहले की गई वीडियो रेकार्डिंग के संपादन का कार्य जारी रहा। पारंपरिक गुरूओं तथा कलारूपों का केन्द्र द्वारा किया गया वीडियो प्रलेखन अपने आप में काफी व्यापक एवं पूर्ण है और शोधकर्ता उसका प्राथमिक सामग्री के रूप में सहर्ष उपयोग कर सकते हैं। यह प्रस्तुत किए गए कार्यक्रमों की रेकार्डिंग मात्र नहीं है। केन्द्र को आशा है कि वह 1991 तक ऐसे पांच वीडियो कैसेट जारी कर सकेगा जो अनुसंधान प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल किए जा सकेंगे।

कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम

केन्द्र के कला निधि प्रभाग ने संग्रह करने की दृष्टि से कुछ विशेष क्षेत्रों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। इस कार्य के लिए चुना गया पहला विशेष क्षेत्र दक्षिणपूर्व एशिया है। समीक्षाधीन वर्ष में दक्षिणपूर्व एशिया विषयक सामग्री, विशेष रूप से वहां की सभ्यता एवं संस्कृति विषयक सामग्री प्राप्त करने के कार्यक्रम के लिए संबंधित साहित्य का व्यापक रूप से अनुशीलन किया गया। दक्षिणपूर्व एशिया के विषय में केन्द्र के पास जो भी स्रोत सामग्री उपलब्ध है उसका कंप्यूटरीकृत सूचक (इंडेक्स) तैयार किया जा चुका है और उसे अद्यतन बनाए रखने का काम बराबर चलता रहता है। आलोच्य अवधि में 250 शीर्षकों की मूल सूची में 450 नई प्रविष्टियां जोड़ी गई। यह दक्षिणपूर्व एशिया विषयक शोध कार्य में संलग्न अध्येताओं के लिए एक बहुमूल्य द्वितीय श्रेणी की स्रोत सामग्री है।

एक दूसरा विषय है चीनी भारतीय अध्ययन। पुस्तकालय में एक विशेष अनुभाग स्थापित करने के उद्देश्य से आलोच्य वर्ष में इस कार्य का सभारंभ किया गया। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में चीन अध्ययन विभाग के प्रोफेसर तान चुंग ने इस विषय पर केन्द्र को सलाह देने और चीन तथा भारत के पारस्परिक हितों को बढ़ावा देने वाली विशेष परियोजनाएं प्रारंभ करने के लिए अवैतनिक परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

कुछ विद्वानों को भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया। उनमें से एक थे श्री हांग सोथ, उप निदेशक, सूचना तथा संस्कृति मंत्रालय, कंबोडिया सरकार, नोम पेन्ह, कंबोडिया (कंबोडिया में रामायण विषय पर भाषण के लिए), और दूसरे थे तान चुंग, अवैतनिक परामर्शदाता, भारत चीन अध्ययन कक्ष, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र।

भविष्य में पारस्परिक सहयोग से कार्यक्रम चलाने की संभावनाओं की खोज करने के उद्देश्य से, चूललांगर्न विश्वविद्यालय, बैंकाक, थाइलैंड के प्रो. एस. शिवारक्ष और भारत स्थित बर्मी दूतावास की तृतीय सचिव (संस्कृति) कुमारी थिन थिन ऊ से विचार-विमर्श किया गया। इंडोनेशिया के विद्वानों तथा संस्थाओं से भी बातचीत चलती रही। इंडोनेशिया के साथ कुछ चुने हुए क्षेत्रों में द्विपक्षीय कार्यक्रम तैयार करने का प्रस्ताव है।

II. कला कोश

कला कोश प्रभाग बौद्धिक परंपराओं का उनके बहुस्तरीय एवं बहुविषयक संदर्भों में अनुसंधान करता है। यह केन्द्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन प्रभाग के रूप में काम करता है। यह पाठ्य — मौखिक एवं दृश्य तथा श्रव्य के साथ-साथ सिद्धांत तथा व्यवहार पक्ष को ओर ध्यान आकर्षित करता है।

इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रभाग ने (क) उन प्राथमिक संकल्पनाओं का पता लगाया है जो भारतीय विश्व दृष्टिकोण की मूलाधार हैं और जो सभी विषयों/शास्त्रों तथा जीवन के आयामों में व्याप्त हैं। (ख) प्राथमिक ग्रंथों की स्रोत सामग्री का भी पता लगाया है जो अब तक अज्ञात, अप्रकाशित और अप्राप्य थी। अब उस सामग्री को अनुवाद के साथ मूल भाषा में प्रकाशित किया जाएगा। (ग) उन विद्वानों तथा पंडितों की कृतियों के प्रकाशन की योजना बनाई है जो अपने ही समग्रवादी दृष्टिकोण के माध्यम से अन्तरसांस्कृतिक पद्धति तथा बहुविषयक रीति से कलात्मक परंपराओं को समझने में अग्रणी रहे हैं और (घ) एक 21 खंडीय विश्वकोश के निर्माण का कार्यक्रम प्रारंभ करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार किया है।

प्रभाग का कार्य मुख्य रूप से चार बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :—

क. कलातत्वकोश	: आधारभूत संकल्पनाओं का कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां।
ख. कलामूलशास्त्र	: उन आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला जो भारतीय कलात्मक परंपराओं की बुनियाद है और प्राथमिक ग्रंथ जो किसी भी कला विशेष से संबंधित हैं।
ग. कलासमालोचन	: समीक्षात्मक पांडित्य की श्रृंखला, और
घ. कला विश्वकोश	: कलाओं का बहुखंडीय विश्वकोश।

कार्यक्रम क : कलातत्वकोश

कला कोश प्रभाग की पहली परियोजना है भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश। विभिन्न विद्वानों के परामर्श से, डॉ. लक्ष्मण शास्त्री जोशी के सर्वोपरि मार्गदर्शन में, ऐसे लगभग 250 पारिभाषिक शब्दों की सूची तैयार की गई जो अनेक शास्त्रों के मूल/प्राथमिक ग्रंथों में व्यवहृत हुए हैं और जिनका बीज कलाओं में दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक संकल्पना का अनुसंधान अनेक शास्त्रों/विषयों के प्राथमिक ग्रंथों के माध्यम से किया जाता है। जैसा कि सुविदित है, एक पारिभाषिक शब्द का एक मुख्य अर्थ होता है जो काफी व्यापक होता है, लेकिन कालांतर में उसी शब्द के अनेक अर्थ विकसित हो गए हैं। ऐसे संकलन, विश्लेषण तथा पुन: एकत्रीकरण के द्वारा भारतीय परंपरा की मूलभूत एकता और उसके अनिवार्य अंतरशास्त्रीय स्वरूप का पुनर्निर्माण किया जा सकेगा।

शब्द कोश के लिए अपनाई गई पद्धति में सर्वप्रथम संस्कृत, प्राकृत, पाली आदि भाषाओं में उपलब्ध प्राथमिक स्रोत सामग्री की छानबीन की जाती है। शब्द या संकल्पना विशेष से संबंधित उद्धरणों को निकाल कर और संगत टीका के साथ उनका अंग्रेजी अनुवाद कर के विद्वानों को उन चुने हुए पारिभाषिक शब्दों पर लेख लिखने के लिए कहा जाता है। साथ ही एक कंप्यूटरीकृत डेटाबेस का भी विकास किया जाता है।

इन लेखों में यह बताया जाता है कि अमुक संकल्पना प्राचीनतम काल से कैसे विकसित हुई है, और यह पता लगाया जाता है कि विभिन्न क्षेत्रों में अमूर्त तथा मूर्त स्तरों पर उसका विस्तार कैसे हुआ है और कलाओं के साथ उनका क्या विशेष संबंध है।

प्राचीनतम वैदिक साहित्य से लेकर इतिहास, पुराण, आयुर्वेद, आगमों, तंत्र के प्राथमिक ग्रंथों और फिर बौद्ध तथा जैन स्रोतों से लेकर साहित्य, वास्तु बौद्ध शिल्प, चित्र, संगीत, नाट्य और नृत्य की भारतीय परंपरा के प्राथमिक स्रोतों की छानबीन का कार्य संबंधित विषयों में विशिष्ट रूप से पारंगत संस्थाओं द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में प्राच्य विद्या की लगभग सभी संस्थाओं को सहयोजित किया गया है। इनमें उल्लेखनीय हैं: प्रज्ञा पाठशाला मंडल; वैदिक संशोधन मंडल, पूना विश्वविद्यालय, उच्चतर तिब्बतीय अध्ययन संस्थान, सारनाथ; काशिराज न्यास, वाराणसी; संस्कृत शोध अकादमी, मेलकोटे; कुप्पुस्वामी शास्त्री अनुसंधान संस्थान, मद्रास तथा अन्य अनेक संस्थाएं।

अरबी तथा फारसी स्रोत सामग्री में भी इन शब्दों की खोजबीन करने के लिए कदम उठाए गए हैं। आगे चल कर इनके लिए ग्रीक तथा लेटिन स्रोतों का भी अवगाहन किया जाएगा। अरबी तथा फारसी के आलिमों और ग्रीक तथा लेटिन के विद्वानों से प्रथम संपर्क किया जा चुका है।

कलातत्वकोश, प्रथम खंड

आठ शब्दों के बारे में प्रथम खंड प्रकाशित किया जा चुका है। उसमें 'ब्रह्म', 'पुरुष', 'आत्मन्', 'शरीर', 'प्राण', 'बीज', 'लक्षण' और 'शिल्प' शब्दों का विवेचन किया गया है।

नवीनतम स्थिति : पिछली रिपोर्ट में बताया गया था कि कलातत्वकोश के प्रथम खंड का अंतर्राष्ट्रीय विद्वत्समुदाय में बहुत अच्छा स्वागत हुआ है और इसकी विस्तृत समीक्षा की गई है। उसमें रिपोर्ट में उस खंड की दो समीक्षाएं भी उद्धृत की गई थीं। उसी खंड की दो अन्य समीक्षाओं के उद्धरण नीचे दिए जा रहे हैं:—

आस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय दीर्घा के श्री माइकेल क्रांड ने कलातत्वकोश की समीक्षा करते हुए 'जर्नल साउथ एशिया' (खंड 12 (2) 1989) में लिखा है—"यद्यपि एक ऐसे शब्दकोश का उपहास करना सरल है जिस के पहले वाक्य में ही अवर्णनीय का वर्णन करने का प्रयत्न करने की बात कही गई हो। लेकिन एक नई विशाल श्रृंखला के इस प्रथम खंड को बहुत ही गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। वास्तव में यह भारतीय कला इतिहास के बाह्य रूप को बदलने का समन्वित प्रयास है, जिसमें संस्कृत की सौन्दर्यशास्त्रीय शब्दावली की बारीकियों को बोधगम्य बनाया जा रहा है . . . . पारिभाषिक शब्द का विवेचन करते समय उसकी व्युत्पत्ति, उसका मूल अर्थ तथा ऐतिहासिक विकास और फिर कलाओं में उसका प्रयोग तथा अंत में संक्षिप्त उपसंहार के

बाद संदर्भग्रंथों की सूची दी गई है। शब्द के इतिहास से संबंधित भाग शोधकर्ताओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी होगा क्योंकि इस में दी गई जानकारी संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी में भी दी गई है। (अंग्रेजी अनुवाद बहुधा ए.बी. कीथ, एच.एच. विलसन और आर.सी. जीनर जैसे विद्वानों द्वारा किया गया है) . . . .स्थल-स्थल पर सादृश्य तथा प्रतीकात्मकता दिखाने की तत्परता दृष्टिगोचर होती है किंतु यह खोजने की इच्छा का अभाव खटकता है कि प्रतीक का प्रयोग कितना सटीक है।. . . . हो सकता है कि यह कोश पाठ्य और दृश्य के बीच की अति महत्वपूर्ण कड़ी को पूरी तरह उजागर न कर सके फिर भी कलातत्वकोश का प्रथम खंड इस का बहुत ही उपयोगी साधन है। संपूर्ण हो जाने पर यह बहु-खंडीय शब्दकोश भारतीय कला के अध्ययन के लिए एक अत्यन्त आवश्यक साधन होगा।"

"इंडियन एंड वर्ल्ड आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स" सितंबर 1990 के अंक में श्री एम घमोजा ने लिखा है — "समीक्षाधीन खंड प्रस्तावित कोश का प्रथम खंड है और जैसा कि डा. वात्स्यायन ने इसके आमुख में कहा है, 'इस में सारतत्व को खोजने तथा कुछ मूलभूत संकल्पनाओं को विकसित करने का प्रयास किया गया है। इस खंड के लिए चुने गए आठ शब्दों में से कुछ तो बहुत ही व्यापक हैं और सभी शास्त्रों/विषयों में प्रयुक्त हुए हैं। वे लघु-बृहत आयामों के सूचक होने के कारण परस्पर संबद्ध हैं। ये शब्द उन जटिल संरचनाओं के मूलाधार हैं जो जीव विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान से लेकर गणित तथा आध्यात्मिक सिद्धांतों तक विभिन्न शास्त्रों/विधाओं में उद्भूत हुई हैं'। निबंध लिखने के लिए जिन पांच लेखकों को चुना गया है वे सभी अपने विषय के प्रकांड पंडित हैं और उनके कार्य में विद्वत्ता, स्पष्टता एवं बोधगम्यता दृष्टिगोचर होती है। इन लेखों को लिखने के लिए सामान्य मार्गनिर्देश थे : (1) संक्षिप्त विवरण, (2) व्युत्पत्ति, (3) संकल्पना का मूल अर्थ, (4) संकल्पना का ऐतिहासिक विकास, (5) कलाओं में संकल्पना की अभिव्यक्ति (6) रूप का वर्गीकरण, उपप्रभाग, (7) क्रम, और (8) निष्कर्ष। . . . . इस कोशमाला का विचार और इसकी योजना इतनी सोचविचार कर बनाई गई है कि कोई भी उस की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। प्रथम खंड एक उत्कृष्ट समारंभ है।"

कलातत्वकोश, द्वितीय खंड

जैसा कि पिछले वर्ष की रिपोर्ट में कहा गया था, कलातत्वकोश के द्वितीय खंड में 'दिक्' और 'काल' विषयक 16 पारिभाषिक शब्दों का विवेचन है। जिन जानेमाने विद्वानों को इसका काम सौंपा गया है उनमें शामिल हैं : डॉ. विद्या निवास मिश्र, प्रो. फ्रित्ज स्टाल, डॉ. लेविस रौवेल, डॉ. ए.एन. बालस्लेव, डॉ. ए.एम. घाटगे, डॉ. जी.सी. पाण्डे, डॉ. कपिला वात्स्यायन, प्रो. बी.एन. सरस्वती, श्री एच.एन. चक्रवर्ती, श्री एस. चट्टोपाध्याय, सरोजा भाटे, श्री एस.आर. शर्मा, श्री आर. त्रिपाठी, तथा श्री डी.बी. सेन शर्मा। वर्ष 1990-91 के दौरान पाठों की छानबीन करने और कार्ड बनाने का काम जारी रहा। अधिकांश शब्दों पर लिखे गए निबंध अभी प्रथम प्रारूप की अवस्था में हैं।

इस प्रथम प्रारूप पर विचार करने के लिए प्रधान संपादक डा. कपिला वात्स्यायन तथा कलातत्वकोश के संपादक डा. बेट्टिना बौमर की अध्यक्षता में वाराणसी में एक बैठक हुई। संपादक ने अंतिम प्रारूप तैयार किया। इन निबंधों पर विचार जानने के लिए उन विद्वानों को इनकी प्रतियां दी गई जिन्होंने दिल्ली में आयोजित 'काल' (समय) संगोष्ठी में भाग लिया था। बाकी बचे नौ निबंध भी इस वर्ष प्राप्त हो गए हैं। उनमें से छ : का संपादन हो चुका है और वे मुद्रण के लिए कंपोज हो चुके हैं। शेष तीन निबंधों को भी अंतिम रूप दिया जा रहा है। इन सब निबंधों से मिलकर कलातत्वकोश के दूसरे खंड का निर्माण होगा और आशा है, वह मई 1991 तक छप कर विमोचन के बाद उपलब्ध हो जाएगा।

पंचभूतों से संबंधित तृतीय खंड का कार्य भी 1990-91 तक चलता रहा। यह कार्य प्रमुख रूप से प्राथमिक ग्रंथों की छानबीन करने और कार्ड तैयार करने के संबंध में था। यह कार्य पूना तथा वाराणसी में होता रहा। इस संबंध में 16 पारिभाषिक शब्दों को चुना गया है। इन पर निबंध लिखवाने के लिए विद्वानों से संपर्क किया जा रहा है। वर्ष 1991-92 में भूत विषय पर दो तीन संगोष्ठियां आयोजित की जाएंगी जिनमें इस तीसरे खंड के विषयों तथा तत्संबंधी दृष्टिकोणों को स्पष्ट करने के साथ-साथ चौथे खंड के लिए कलादर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत एक समेकित विषय पर प्रदर्शनियों एवं संगोष्ठियों के आयोजन पर विचार किया जाएगा।

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र

पिछली रिपोर्ट : कलाकोश प्रभाग का दूसरा दीर्घकालिक कार्यक्रम है — वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य तथा नाट्य तक की भारतीय कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों का पता लगाना और उनका समालोचनात्मक संपादन कर के टीका टिप्पणियों तथा अनुवादों के साथ उन्हें श्रृंखलाबद्ध रूप में प्रकाशित करना।

'मात्रालक्षणम्' तथा 'दत्तिलम्' नामक दो ग्रंथ 1988-89 में प्रकाशित किए गए थे और 12 दिसंबर 1988 को न्यास के अध्यक्ष द्वारा उनका विमोचन किया गया था। 'मात्रालक्षणम्' में सामवेद से संबंधित वैदिक स्वरों का विवेचन किया गया है और 'दत्तिलम्' संगीत विषयक एक अतिप्राचीन ग्रंथ है।

नवीनतम स्थिति : जैसा कि पिछली रिपोर्ट में कहा गया था, केन्द्र भारतीय परंपरा, विशेषत : कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों को द्विभाषी रूप में प्रकाशित करने का कार्यक्रम चलाता है। वर्ष 1990-91 में सात अत्यंत तकनीकी ग्रंथों के संकलन एवं संपादन का कार्य सम्पन्न हुआ। ये ग्रंथ हैं : ईश्वर संहिता, कालिका पुराण, हस्तमुक्तावली, बृहद्देशी, नर्त्तननिर्णय, रिसाल-इ-रागदर्पण मानकुतूहल और श्रीकविकर्ण। इनमें से तीन अभी छप रहे हैं और जून 1991 तक प्रकाशित हो जाएंगे। रिसाल-इ-रागदर्पण मानकुतूहल के सुलेखन का कार्य चल रहा है और उसका भी 1991 में विमोचन हो जाएगा।

कलामूलशास्त्र कार्यक्रम के अंतर्गत इन सात ग्रंथों के अलावा 28 अन्य तकनीकी ग्रंथों का कार्य प्रकाशन की विभिन्न अवस्थाओं में है। इनमें से कुछ ग्रंथ हैं : जैमिनीय सामवेद (गण तथा आर्चिक दोनों), काण्व शतपथ ब्राह्मण, आपस्तंब और बौधायन श्रौतसूत्र, तंत्रसमुच्चय, सूक्ष्मागम आदि। वास्तुशिल्प तथा प्रतिमा विज्ञान विषयक अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों के संपादन का कार्य भी हाथ में लिया जा चुका है।

कलामूलशास्त्र की श्रृंखला के कार्य में प्राच्य अध्ययन के क्षेत्र में कार्यरत सभी प्रमुख संस्थाओं तथा विश्व के सभी भागों में मान्यताप्राप्त विद्वानों को सहयोजित किया गया है। इनमें से कुछ के नाम हैं: हेलसिंकी के प्रो. आस्को पारपोला, डा. सी.आर. स्वामिनाथन, डा. ई.आर. श्रीकृष्ण शर्मा, और भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान के डा. नवठे — वैदिक ग्रंथों के लिए, डा. वैन होवार्ड, डा. मुकुंद लाठ, डा. प्रेमलता शर्मा, प्रो. सत्यनारायण और डा. महेश्वर नियोग — संगीत तथा नृत्य संबंधी ग्रंथों के लिए, डा. लक्ष्मी थथचर और प्रो. विश्वनारायण शास्त्री — आगमों तथा पुराणों के लिए, और डा. कुंजुनी राजा, डा. ए.एम. ढाके और डा. ब्रूनो दाजां — वास्तुकला विषयक ग्रंथों के लिए।

डा. विद्यानिवास मिश्र प्राथमिक स्रोत सामग्री का एक संग्रह तैयार कर रहे हैं। इस श्रृंखला को 'कला आधार' कहा जाएगा।

कलाकोश प्रभाग ने अपने कलातत्त्वकोश तथा कलामूलशास्त्र के अनुसंधान एवं प्रकाशन कार्यक्रमों के माध्यम से भारत (35) तथा विदेशों (6) की 41 संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित किए हैं। प्रभाग ने उन संस्थाओं को उनके कार्यक्रमों में सहयोग दिया है और उन संस्थाओं के विद्वानों को अपने कार्यक्रमों में सहयोजित किया है।

इन संस्थाओं में से कुछ उल्लेखनीय हैं : अडयार पुस्तकालय एवं शोध संस्थान, मद्रास; कुप्पुस्वामी शास्त्री शोध संस्थान, मद्रास; एशियाई अध्ययन संस्थान, मद्रास; पूना विश्वविद्यालय, पुणे; वैदिक संशोधन मंडल, पुणे; भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे; प्रज्ञा पाठशाला मंडल, वाई, महाराष्ट्र; केदारनाथ गवेषणा प्रतिष्ठान, उड़ीसा; के.पी. अतोमबापू शर्मा शोध संस्थान, मणिपुर; वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय; केन्द्रीय उच्चतर तिब्बतीय अध्ययन संस्थान, वाराणसी; उच्चतर तिब्बतीय अध्ययन का अमेरिकी संस्थान, वाराणसी और भारतीय अध्ययन का अमेरिकी संस्थान, वाराणसी। इन सब संस्थाओं को सहयोजित किया गया है।

भारतविद्या का फ्रांसीसी संस्थान, पांडीचेरी, इकोल फ्रांसे द एक्स्ट्रीम ओरिएंट, पांडीचेरी और फ्रांस स्थित सी.एन.आर.एस. के कई प्रभागों से भी केन्द्र के कार्यक्रमों में सहयोग मिल रहा है। कश्मीर शैवमत पर एक ग्रंथ के प्रकाशन के संबंध में केन्द्र बोस्टन (संयुक्त राज्य अमेरिका) के नित्यानंद संस्थान से भी संपर्क बनाए हुए है।

कार्यक्रम ग: कलासमालोचन

कलाकोश प्रभाग का तीसरा कार्यक्रम द्वितीय श्रेणी की सामग्री और समालोचनात्मक पांडित्य पर केन्द्रित है। उन्नीसवीं शताब्दी में और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में कुछ विद्वानों ने भारतीय तथा एशियाई कलाओं के संबंध में एक नए दृष्टिकोण की नींव डाली थी जो आज भी सुसंगत तथा उपादेय है। इस दिशा में आगे अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए कला समालोचन श्रृंखला के अंतर्गत कुछ चुने हुए विद्वानों की कृतियों को प्रकाशित करने का कार्य प्रारंभ किया गया है। चयन की कसौटी अंतरसांस्कृतिक बोध तथा बहुविषयक दृष्टिकोण के कारण उस कृति का महत्व एवं उसकी दुर्लभता है।

प्रथम चरण में, विलियम स्टटरहाइम द्वारा लिखित 'राम लेजंड एंड राम रिलीफ्स' और 'दि थाउजंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर' नामक सचित्र ग्रंथ का प्रकाशन किया गया था। डा. आनंद के. कुमारस्वामी की ग्रंथमाला का पहला खंड 'सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ आनंद कुमारस्वामी' भी प्रकाशित किया जा चुका है। इन तीनों प्रकाशनों की विद्वानों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत 'सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ रोमां रोलां' शीर्षक एक अन्य खंड प्रकाशित किया गया और 19 जनवरी, 1990 को 'गांधी स्मृति तथा गांधी दर्शन' के परिसर में आयोजित एक शानदार समारोह में डा. वी.एन. पांडे द्वारा इसका विमोचन किया गया। इस वर्ष आनंद कुमारस्वामी के विषयानुसार सुव्यस्थित ग्रंथों के प्रकाशन के कार्य में तेजी आई। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अगले दशक में 30 खंड प्रकाशित करने की योजना है।

नवीनतम स्थिति: आलोच्य वर्ष में, डा. आनंद के. कुमारस्वामी की कृतियों के कई खंडों पर विभिन्न अवस्थाओं में काम हो रहा है। इनमें से दो खंड, अर्थात् 'वॉट इज सिविलाइजेशन' और 'टाइम एंड ईटर्निटी' का विमोचन परमपावन दलाई लामा द्वारा 26 नवंबर, 1990 को 'काल' विषयक संगोष्ठी के समापन समारोह के अवसर पर किया गया।

डा. कुमारस्वामी के कई अन्य खंडों के प्रकाशन का कार्य विभिन्न अवस्थाओं पर है और उनमें से निम्नलिखित खंडों को 1991-92 में प्रकाशित करने का कार्यक्रम बनाया गया है:—

विद्यापति पदावली
स्पिरिच्युअल अथॉरिटी एंड टैंपोरल पावर
एसेज ऑन जीओलॉजी
एसेज ऑन अरली इंडियन आर्किटैक्चर
यक्षाज
ऐसेज ऑन नैशनलिज्म
ऐसेज ऑन एजुकेशन

डा. कुमारस्वामी के 'वॉट इज सिविलाइजेशन' के पुनर्मुद्रित संस्करण की 'दि हिंदुस्तान टाइम्स', 'दि इकनामिक टाइम्स' और 'दि इंडेपेंडेंट' जैसी कई पत्रपत्रिकाओं में समीक्षा की गई है। इस पुस्तक की एक समीक्षा ए. रंगनाथ द्वारा आकाशवाणी, मद्रास पर प्रसारित की गई। उनके अनुसार, आनंद कुमारस्वामी हमारे समय के एक महान सेतु निर्माता ही नहीं, अपितु एक नए पुनर्जागरण के अग्रदूत भी थे। क्योंकि वे उस दिन की प्रतीक्षा में थे जब विश्व में सभी दुःख-द्वंदों का समाधान हो जाएगा और मानव को शाश्वत दर्शन में आध्यात्मिक नवजीवन प्राप्त होगा। इसलिए यह विशेष रूप से समीचीन था कि आनंद कुमारस्वामी की संगृहीत कृतियों की प्रकाशन माला में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा प्रकाशित किया जाने वाला द्वितीय ग्रंथ 20 दार्शनिक निबंधों के बारे में हो। प्रो. सैयद हुसैन नस्र के प्रबोधक प्राक्कथन से उद्धृत करते हुए रंगनाथन ने कहा कि "डा. कुमारस्वामी के निबंधों में एक ऐसी सामयिकता दृष्टिगोचर होती है जो उनके शाश्वत वर्तमान में बद्धमूल होने के कारण उत्पन्न हुई है।" उन्होंने आगे कहा कि आनंद कुमारस्वामी अपने जीवन की अंतिम अवस्था में, जब वे शेक्सपियर के शब्दों में 'पूर्ण परिपक्वता' की स्थिति में थे, अंतर्मुखी हो गए। और *'वॉट इज सिविलाइजेशन'* नामक यह निबंध संकलन 'प्रतीक' तथा

'प्रतीकों की व्याख्या' से लेकर 'महात्मा' तथा 'दर्शन की प्रासंगिकता' जैसे विभिन्न प्रकार के आध्यात्मिक विषयों को प्रस्तुत करता है। इस में 'ब्यूटी' (सौंदर्य), 'लाइट एंड साउंड' (प्रकाश एवं ध्वनि), 'विंडोज ऑफ दि सोल' (अंतरात्मा के कपाट), 'ग्रेडेशन एंड ईवोल्यूशन' (क्रमिक परिवर्तन एवं विकास), 'ऑन हेयर्स एंड ड्रीम्स' (शासकों एवं स्वप्नों पर), 'वॉट इज सिविलाइजेशन' (सभ्यता क्या है), 'दि सिंबोलिज्म ऑफ आर्चरी' (धनुर्विद्या की प्रतीकात्मकता), और 'एथीना एंड हेफैस्टॉस' (एथीना तथा हेफैस्टॉस) जैसे महत्वपूर्ण एवं विभिन्न विषयों से संबंधित निबंध संगृहीत हैं।"

दिनांक 4 नवंबर, 1990 के 'दि इकनामिक टाइम्स' में प्रकाशित समीक्षा में श्री जी.पी. देशपांडे ने लिखा है कि इस खंड में संकलित सभी 20 निबंधों में जहां ग्रीक से जितने उद्धरण हैं, उतने ही संस्कृत से भी हैं, बार-बार एक ही तथ्य उजागर करने का प्रयत्न किया गया है कि सभी प्राचीन दर्शनों (अध्यात्म) का ध्यान एक ही जटिल समस्या पर केन्द्रित है। देशपांडे के शब्दों में, "कुमारस्वामी की बौद्धिक यात्रा जैसा कि वे इसे कहते थे अथवा तीर्थयात्रा (पिलग्रिम्स प्रोग्रेस) जैसा कि उन्होंने अपने निबंध 'दि पिलग्रिम्स वे' में कहा है, का उद्देश्य एक ऐसी स्थिति की आध्यात्मिक समीक्षा करना था, जिसमें एक 'उत्पादक यांत्रिक' (मिस्त्री) की आधुनिक उत्पादक गतिविधि एक दास-कर्म बन कर रह गई है जिसके बारे में वह स्वयं नहीं जानता कि आखिर वह कर क्या रहा है, भले ही वह कितना ही उद्यमी क्यों न हो और वह एक ऐसे क्रीतदास की दशा को प्राप्त हो गया है जो अपने मालिक के लिए ही कमाता है।" उनके अनुसार, आज हम भौतिकवादी प्रवृत्तियों से अभिभूत हो कर पारंपरिक कला को समझने में पूर्णतः असमर्थ हो गए हैं। यदि संक्षेप में, सरल शब्दों में कहें तो उनकी धारणा यह थी कि आप पारंपरिक कलाओं तथा समाजों को तब तक नहीं समझ सकते जब तक कि उन समाजों द्वारा उत्पन्न अध्यात्म/तत्वमीमांसा को हृदयंगम नहीं कर लेते। आगे उन्होंने कई उदाहरण देते हुए कहा है कि श्रमिक वह है जिसमें चाहे पूंजीवादी औद्योगिक व्यवस्था हो या सर्वाधिकारवादी, एथीना को हेफैस्टॉस से अलग कर दिया गया है। जरा देखिए, यूनानी मिथक का कितना शानदार प्रयोग किया गया है। दूसरे शब्दों में, कुमारस्वामी का विचार था कि आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था ने भी परंपरागत प्रतीकों, आधारों की तरह, सौंदर्य की संकल्पनाएं प्रकाश एवं ध्वनि, भाग्य की संकल्पनाएं बनाई हैं और यह भी कि प्राचीन लोग चाहे वे भारतीय थे अथवा सामी या यूनानी, उनके आध्यात्मिक विचार एक नहीं तो एक जैसे अवश्य थे। यही विचारधारा उन्हें विश्व का सच्चा नागरिक बनाती है और इस निष्कर्ष तक पहुंचाती है कि सभी धर्मों का एक सामान्य आध्यात्मिक आधार है और भिन्न-भिन्न संस्कृतियां अलग होते हुए भी मूल रूप में एक हैं मानों वे एक सामान्य आत्मिक एवं बौद्धिक भाषा की अलग-अलग बोलियां हों।" इसी लिए उन्होंने बलपूर्वक कहा है कि "जो भी इस तथ्य को जान लेता है वह यह कभी दावा नहीं करेगा कि 'मेरा धर्म सर्वोत्तम है,' बल्कि यही कहेगा कि 'मेरा धर्म मेरे लिए सर्वोत्तम है'।"

उषा हेम्मादि ने 2 दिसंबर, 1990 के 'दि इंडिपेंडेंट' में इस ग्रंथ की समीक्षा करते हुए लिखा है, "मध्यकालीन सिद्धांत के अनुसार, शिल्पी को सब से पहले इस बात की चिंता होनी चाहिए कि उसके कार्य का क्या सुफल निकलता है। इस संदर्भ में, आनंद कुमारस्वामी की कृति सुंदर होने के साथ-साथ उद्बोधक भी है। इसके अलावा इसमें कालजयी होने के गुण के साथ-साथ वह आकर्षण भी है जो दार्शनिक कृतियों में अधिकतर नहीं पाया जाता। उन्होंने आगे कहा है कि कुमारस्वामी का मानस पूर्व की परंपरा तक ही सीमित नहीं था बल्कि उसने प्राचीन यूनान से लेकर इस्लाम की दुनिया तथा मध्यकालीन यूरोप तक की परंपरा को अपने में समाहित किया था। इस पुस्तक में, वे सर्जनशीलता की उत्पत्ति और उसकी अभिव्यक्ति को खोजने तथा पहचानने के लिए मानव मस्तिष्क का अवगाहन करते हैं।" कुमारस्वामी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए, उषा हेम्मादि ने अंत में कहा है कि "आनंद कुमारस्वामी का उनकी मृत्यु के 40 वर्ष बाद आज भी कला के क्षेत्र में बोलबाला है। अपने जीवनकाल में कला तथा जीवन के बारे में उन्होंने जो कुछ भी लिखा और कहा था कि वह आज भी उतना ही नया एवं प्रासंगिक है जितना पहले था और आगे भी ऐसा ही रहेगा। कुमारस्वामी इस शताब्दी के उन इनेगिने बुद्धिजीवियों में से थे जिन्होंने परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया और ऐसा करते हुए उन्होंने समाज में रहने वाले मानव का सच्चा अर्थ पुनः प्रस्तुत किया।

27 जनवरी, 1991 के 'दि हिन्दुस्तान टाइम्स' में इस ग्रंथ की समीक्षा करते हुए कृष्ण चैतन्य ने लिखा : "यहां सभ्यता से

कुमारस्वामी का तात्पर्य सांस्कृतिक संकल्पनाओं के समुच्चय से है जो मानव को विश्व की सभी ऐतिहासिक संस्कृतियों से विरासत में मिला है और आज भी उसके लिए अत्यंत मूल्यवान है।" उन्होंने आगे कहा, "इस संग्रह में अनेक ऐसे मुद्दों पर विचार किया गया है जो व्यापक हित के हैं। कारण यह कि कुमारस्वामी दार्शनिक अर्थ में स्वतंत्रता की चर्चा में यह बताते हुए काफी स्पष्टता लाते हैं कि इसका मूल्यांकन प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति में विद्यमान अंतःशक्तियों और उनके विकास को बढ़ावा देने या रोकने वाली परिस्थितियों के संदर्भ में किया जाएगा।" कृष्ण चैतन्य ने अपनी समीक्षा इन शब्दों के साथ समाप्त की कि "अपने निबंध 'एथीना तथा हेफैस्टॉस' में कुमारस्वामी ने बताया है कि प्राचीन यूनानवासी यह भली-भांति समझ गए थे कि कला केवल तकनीकी प्रवीणता नहीं हो सकती, कुशलता बुद्धि से अनुप्राणित होनी चाहिए और यूनानी विचारधारा ने इस समेकित कलाकौशल को मनुष्य के सदाचारपूर्ण अनुशासन तथा संसार के सुचारु संचालन के लिए आवश्यक बताया था। गीता में भी कलाकौशल के इस आयाम पर गहराई से विचार किया गया है।" किंतु आज, "कलाकार अपनी वस्तु को बेचने में और राजनीतिबाज स्वयं को अपने मतदाताओं को बेचने में इस तथ्य को पूरी तरह भुला चुका है।"

कुछ अन्य ग्रंथ जिनका कलासमालोचन श्रृंखला के अंतर्गत 1990 में विमोचन किया गया वे हैं:—

प्रो. सैयद हुसैन नस्र की कृति 'इस्लामिक आर्ट एंड स्पिरिच्युअलिटी' का विमोचन 21 नवंबर, 1990 को डा. कैथलीन रैने द्वारा किया गया। इसी प्रकार डा. जे.एम. मेलविले की पुस्तक 'टाइम एंड ईटर्नल चेंज' का विमोचन डा. दौलतसिंह कोठारी द्वारा 22 नवंबर, 1990 को किया गया। तत्पश्चात् 24 नवंबर, 1990 को डा. राम पी. कुमारस्वामी ने एलिस बोनर की रचना 'प्रिंसिपल्स ऑफ कॉम्पोजीशन इन हिंदू स्कल्पचर' का विमोचन किया।

सैयद हुसैन नस्र की पुस्तक 'इस्लामिक आर्ट एंड स्पिरिच्युअलिटी' की राम धमोजा द्वारा की गई समीक्षा 'इंडियन एंड वर्ल्ड आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई। उनके अनुसार, "समीक्षाधीन पुस्तक ऐसे अनेक व्याख्यानों तथा निबंधों का संकलन है जिनमें इस्लामिक कलाओं — स्थापत्य, प्लास्टिक कला, शिल्प, सुलेखन, शायरी तथा संगीत — के आध्यात्मिक महत्व का विवेचन किया गया है। इन निबंधों में डा. हुसैन नस्र ने इन कलाओं के रूप, विषयवस्तु, प्रतीक, भाषा तथा अर्थ की बारीक परतों का इस्लामिक प्रकाशन के मूल स्रोतों — पैगंबर तथा कुरान से संबंध जोड़ा है। इस्लामिक कला तथा इस्लामिक आध्यात्मिकता के पारस्परिक संबंध पर व्यापक रूप से विचार-विमर्श करते हुए लेखक ने इस कला को संरक्षण तथा प्रश्रय देने के पक्ष की भी चर्चा की है और खासतौर से यह बताया है कि इस्लामिक समाज के धर्माधिकारियों ने इस प्रश्रय कार्य में कितने रोड़े अटकाए और इस कला को धर्मनिरपेक्ष संरक्षण कितना मिला। जिन अन्य पहलुओं पर लेखक ने काफी विस्तार से चर्चा की है वे हैं: इस्लामिक कला का आध्यात्मिक स्तर और सूफी परंपरा की भूमिका।

अंत में, राम धमोजा ने लिखा है कि "यह एक पतली और सुरुचिसम्पन्न डिजाइन वाली पुस्तक है जिसमें विषय को स्पष्ट करने के लिए उपयुक्त तथा सौम्य चित्र दिए गए हैं।"

कुछ अन्य खंडों के कार्य में भी प्रगति हुई है, जैसे पॉल मूस की कृति 'बाराबुदुर' का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद, कारमेल बर्कसन की पुस्तक 'एलोरा : संकलपना एवं शैली', और नवी हादी की रचना 'डिक्शनरी ऑफ इंडो-पर्शियन लिटरेचर'। इनके अलावा, दिनांक 21 नवंबर, 1990 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 'पर्यावरण संकट : एक प्राच्य दृष्टिकोण' (एनवाइरनमेंटल क्राइसिस : एन ओरिएंटल व्यू) विषय पर प्रो. सैयद हुसैन नस्र द्वारा दिए गए भाषण पर आधारित एक प्रबंध ग्रंथ भी इस वर्ष प्रकाशित किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में सहयोजित विख्यात विद्वानों के नाम हैं : श्री ब्रायन कोबल, श्री एल. केनेफस्काय, डा. स्टेला क्रैमरिश, प्रो. मार्टिन लर्नर, प्रो. टी.एस. मैक्सवेल, श्री जेम्स एस. क्राउच, प्रो. मिकाइल डब्लू माइस्तर, श्री एलविन मूर (जूनियर), प्रो. सैयद हुसैन नस्र, सुश्री कैथलीन रैने, श्री पॉल श्रोडर, डा. एस. दुराई राजा सिंगम, डा. (श्रीमती) लूइस पैनेनबर्ग स्टटरहाइम, डा. डेनियल एच. स्मिथ, प्रो. फ्रिट्स स्टाल, डा. जे.एम. मेलविले, श्री कैथरीन ओ. ब्राएन, डा. रोजर लिप्से, श्री विलियम सी. चिट्टिक, प्रो. डब्लू.ए. डियर, प्रो. एरिक हैनसेन।

कार्यक्रम घ : कला विश्वकोश

इस कार्यक्रम के अंतर्गत कलाकोश प्रभाग द्वारा 21 खंडीय कला विश्वकोश निकालने की परिकल्पना की गई है। जैसा कि पिछली रिपोर्ट में कहा गया था, उक्त विश्वकोश का आशय विवरण तथा कार्य सूची तैयार करने के लिए 1989 के एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला में विश्व में उपलब्ध सभी विश्वकोशों की समीक्षा की गई ताकि केन्द्र की इस परियोजना के व्याप्ति क्षेत्र और उसमें शामिल किए जाने वाले विषयों की रूपरेखा तैयार की जा सके। इस कार्यशाला में विश्वभर के कला विशेषज्ञ विद्वानों ने भाग लिया। यह विश्वकोश सर्जनात्मक अनुभवों के साथ-साथ सभी सांस्कृतिक क्षेत्रों की कलाओं का अन्वेषण करेगा। ऐसी परंपरागत वितंडावादी मनोवृत्तियों से कलाओं की संकल्पना को छुटकारा दिला कर जिन्होंने अपनी अति विशेषज्ञता के कारण कला को जीवन में केन्द्रीय स्थिति से सदा विस्थापित किए रखा है, यह विश्वकोश जीवंत रूप में सर्जनात्मक कलाओं के बोध पर बल देगा। पाठ, विषय-वस्तु और अभिव्यक्ति के स्तरों पर सर्जन की प्रक्रिया के समग्र पर्यावरण को समुचित महत्व दिया जाएगा।

यह कलाकोश प्रभाग का एक दीर्घकालीन कार्यक्रम है और अभी तक यह संकल्पना, अध्ययन तथा आयोजन की प्रारंभिक अवस्थाओं में ही है।

III. जनपद संपदा

जनपद संपदा प्रभाग कलाकोश प्रभाग के कार्यक्रमों के पूरक के रूप में कार्य करता है। इस का ध्यान पाठ और संदर्भ के बजाए भारत और एशिया की जनजातीय एवं ग्रामीण संस्कृतियों की समृद्ध तथा विविध रूप-रंगों में उपलब्ध धरोहर की कलात्मक अभिव्यक्तियों पर केन्द्रित रहता है। कला और संस्कृति के क्षेत्र में निरंतरता एवं परिवर्तनशीलता बराबर बनी रही है। बीच-बीच में अनेक छोटे-बड़े सांस्कृतिक आंदोलन होते रहे हैं, जिनके द्वारा अधिक कठोर, निर्जीव, गतिहीन तथा संहिताबद्ध परंपराओं को, जिन्हें 'शास्त्रीय' कहा जाता है, अपने कायाकल्प के लिए प्रेरणा मिलती है और इस प्रकार सांस्कृतिक क्षेत्र में नवीकरण की प्रक्रिया बराबर चालू रही है। कलात्मक अभिव्यक्ति जीवन चक्र तथा जीवन संचालन का अभिन्न अंग है। यह अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में छोटे या बड़े पैमाने पर अनेक रूपों और प्रकारों के मेलों और उत्सवों के माध्यम से सामूहिक तौर पर बारहों महीने होती रही है। आज भी ये मेले-महोत्सव अपनी सजीवता और चहल-पहल के लिए तो खूब जाने-माने जाते हैं, पर अब तक उनको विश्व के समग्र रूप की सजीव निरंतरता को अभिव्यक्त करने वाली संपूर्णता की बजाए अलग-अलग टुकड़ों में ही देखा गया है।

जनपद संपदा प्रभाग के अनुसंधान तथा अन्य कार्यकलापों का उद्देश्य इन कलाओं की उनके आर्थिक-सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक संदर्भों में पुनः स्थापित करना और भारतीय समाज तथा संस्कृति के विकास में उनके योगदान को उजागर करना है। उन्हें पाठ्य परंपराओं की अतिरिक्त या उपधारा नहीं समझा जा रहा है। हालांकि मौखिक परंपराओं पर जोर दिया जा रहा है, पर लिखित परंपराओं और सिद्धांत पक्ष की भी उपेक्षा नहीं की जा रही है। एक बार फिर सिद्धांत पक्ष तथा व्यवहार पक्ष, पाठ्य तथा मौखिक, शाब्दिक, दृश्य तथा गत्यात्मक सभी पक्षों को एक लाक्षणिक पूर्ण के रूप में देखा जा रहा है, न कि समेकित किए जाने वाले अलग-अलग खंडों के रूप में। कार्यक्रम प्रसार करने के मामले में जन, लोक, देश, लौकिक, मौखिक जैसे शब्दों को महत्त्व दिया जा रहा है।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों का विभाजन इस प्रकार है :—

क. *मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह* : इन संग्रहों में मूल, अनुकृतियाँ तथा रिप्रोग्राफिक प्रतिलिपियां बुनियादी स्रोत सामग्री के रूप में इकट्ठी की जाएंगी।

ख. *बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां* : दो दीर्घाएं स्थापित की जाएंगी, (i) आदि दृश्य जिसमें भारत तथा अन्य देशों की प्रागैतिहासिक शैल कला प्रदर्शित की जाएगी और (ii) आदि श्रव्य, जिसमें संगीत तथा संगीतेतर ध्वनि की

अभिव्यक्ति होगी। दूसरे शब्दों में, दृष्टि तथा ध्वनि की ज्ञानेन्द्रियों (आंख एवं कान) से संबंधित आधारभूत संकल्पनाएं प्रस्तुत की जाएंगी।

ग. *जीवन शैली अध्ययन* : ये कार्यक्रम आगे (i) लोक परंपरा और (ii) क्षेत्र संपदा नामक दो भागों में बंटे हैं। लोक परंपरा के अंतर्गत, भारत के भिन्न-भिन्न आर्थिक क्षेत्रों में मनुष्य की जीवन शैलियों का अध्ययन किया जाता है। क्षेत्र संपदा के अंतर्गत विशेष स्थानों या मंदिर परिसरों के ऐसे अध्ययन की कल्पना की गई है जिसमें उनके भक्ति विषयक कलात्मक, भौगोलिक और सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने वाली प्रक्रिया को भी ध्यान में रखा जाता है।

घ. *बाल जगत* : इस अनुभाग के कार्यक्रमों का उद्देश्य बच्चों को ग्रामीण संस्कृतियों की समृद्ध परंपरा तथा तत्संबंधी वास्तविकिताओं से उनके घरेलू तथा स्कूली वातावरण के माध्यम से परिचित कराना है, जिनसे वे अब तक अछूते रहे हैं।

ङ. *प्रायोगिक रंगशाला एवं स्टूडियो* : इसका उद्देश्य एक ऐसा स्थल उपलब्ध कराना है जहां मिलकर सामूहिक कार्यकलाप तथा नए-नए प्रयोग किए जा सकें। यहीं पर कार्यालय के आंतरिक प्रलेखन कार्य के लिए स्टूडियों की व्यवस्था है।

च. *संरक्षण प्रयोगशालाएं* : इन प्रयोगशालाओं का कार्य कलाकृतियों तथा कला शिल्पों का संरक्षण करना है।

इस प्रभाग के कार्यकलापों में वर्ष 1990-91 के दौरान काफी तेजी आई जिसका ब्यौरा नीचे दिया गया है :—

कार्यक्रम क : मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह

(I) प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त सामग्री

1. केरल की विध्यात्मक कलाओं पर स्लाइडों का संग्रह

केरल के तेय्यम, सिरी, भूत, नागम तुल्लाल, मलयम केतु, तुंबी तुल्लाल, केतु कलचा तथा अन्य अनुष्ठानों की 1,808 मौलिक रंगीन पारदर्शियां (ट्रांसपेरेंसी) प्राप्त करने के लिए विख्यात कलाकार श्री बालन नंबियार के साथ बातचीत की गई। भूत तथा तेय्यम अनुष्ठानों का विवरण डा. सौता नंबियार से प्राप्त हुआ इसे पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है।

2. पुत्तलिकाओं का संग्रह

सितंबर 1990 में नई दिल्ली में आयोजित भारत के अंतर्राष्ट्रीय पुत्तलिका महोत्सव में भाग लेने के लिए आई पुत्तलिका मंडलियों से उपहारस्वरूप पुत्तलिकाएं प्राप्त की गईं। पुत्तलिकाएं भेंट करने वाले कलाकार अर्जेन्टीना, आस्ट्रिया, आस्ट्रेलिया, कनाडा, चिली, मिस्र, इंडोनेशिया, माले, फिलीपीन, रूमानिया, दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, तुर्की, सोवियत संघ और वियतनाम के प्रतिनिधि थे। एक छाया पुत्तलिका 'सौता' (तोलपावा) केरल से प्राप्त हुई जिसे श्री के.एल. कृष्णनकुट्टी पुलवार ने भेंट दिया था, और दो पुत्तलिकाएं पिंगुलि कुडल गांव (महाराष्ट्र) के श्री परशुराम विश्राम गंगवने से खरीदी गई। इनमें सबसे बड़ा संग्रह इंडोनेशिया के बाली द्वीप की वायांग कुलित नामक छाया पुत्तलिकाओं का है जो इंडोनेशिया की ओर से भारत स्थित इंडोनेशियाई राजदूत डा. आई.बी. मंत्र द्वारा केन्द्र को भेंट किया गया था। इंडोनेशिया से मंच सज्जा सामग्री तथा वाद्ययंत्र 'गम्मेलन' भी प्राप्त हुए। अब पुत्तलिकाओं की कुल संख्या बढ़ कर 132 हो गई है। इन के अलावा, दक्षिण कोरिया से दो ढोल भी उपहारस्वरूप प्राप्त हुए।

(II) अनुसंधान विधि

1. ईसाई भजन

पूर्वी भारत में प्रचलित ईसाई भजनों के 28 टेप जो कुमारी बुलबुल सरकार द्वारा सम्यक रूप से भरे गए थे और तत्संबंधी

संपूर्ण प्रतिवेदन प्राप्त हुए। प्रत्येक भजन का विश्लेषण करने वाली डेटाशीटें उपलब्ध हैं।

2. ब्रह्मो संगीत

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान रचित ब्रह्मो संगीत के प्रलेखन का कार्य कुमारी श्रीलेखा बसु द्वारा संपन्न किया गया। रवीन्द्र संगीत के 75 और अन्य संगीत के 63 ऑडियो टेप गीतों की पुस्तिकाएं तथा पाठ, उनकी रचना तिथि, रचयिता, पहली बार गाए जाने का अवसर, स्वर, ताल, सहायक वाद्य यंत्र आदि के संपूर्ण ब्यौरे के साथ अब तैयार हैं।

3. राबारी परियोजना

फ्रांचेस्को द औराजी फ्लावोनी द्वारा रचित 'राबारी : ए पैस्टोरल कम्यूनिटी ऑफ कच्छ' नामक पुस्तक 'थ्रू फोटोग्राफर्स आइज' (छाया चित्रकार की आंखों के माध्यम से) ग्रंथमाला के प्रथम पुष्प के रूप में प्रकाशित हुई।

4. गारो समुदाय का बांगला उत्सव

श्री बप्पा राय ने गारो लोगों की झूम खेती की पद्धति को तत्संबंधी कर्मकांडों के साथ फिल्माने और अंत में बांगला नृत्य का छायांकन करते हुए एक फिल्म बनाने की योजना हाथ में ली थी। उसका कच्चा प्रारूप अनुमोदित हो चुका है। अन्तिम रूप से संपादित संस्करण अगले वर्ष के प्रारंभ में उपलब्ध हो जाएगा।

कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित प्रस्तुतियों तथा गतिविधियों का उद्देश्य हजारों वर्षों के दौरान भारतीय समाज द्वारा प्रस्तुत की गई कला सामग्री से जनता को अवगत कराना है। दो स्थायी प्रदर्शनियां स्थापित की जाएंगी जो विशेष विषयों तथा क्षेत्रों संबंधी अन्य कार्यक्रमों के लिए पृष्ठभूमि का काम करेंगी। इन प्रदर्शनियों के नाम हैं : 1. आदि दृश्य, और 2. आदि श्रव्य।

आदिदृश्य दीर्घा में भारत की प्रागैतिहासिक शैल कला (रॉक आर्ट) तथा विश्व के अन्य भागों से प्राप्त प्रतिनिधिक नमूने प्रदर्शित किए जाएंगे। यहां पहली बार बताया जाएगा कि शैल कला को एकमात्र 'कर्मकांड' या 'जादूटोने' का ही सूचक नहीं समझा जाना चाहिए। यहां उन अनुकृतियों को प्रदर्शित किया जाएगा जो सर्वप्रथम, चित्रकारी या रेखाचित्र के मूल संदर्भ को सही करके प्रस्तुत करेंगी। दूसरे, उन अनुकृतियों को बिना सोचे-समझे शिकारी जीवन, प्रारंभिक खेती तथा व्यवस्थित कृषि की विकास अवस्थाओं की ओर पीछे व ढकेलते हुए उनका काल सही-सही बतलाने का प्रयत्न किया जाएगा। यहां इस कला को स्वत : स्पष्ट या सुबोध रूप में बताने की बजाए उसके लाक्षणिक गुप्त संकेतों को जनता के लिए स्पष्ट किया जाएगा। पुरातत्वीय तथ्यों तथा कालक्रम आदि के संदर्भ में उस कला के असली अर्थ को समझने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही प्रागैतिहासिक कला और समकालीन जनजातीय कलाओं के पारस्परिक संबंध को प्रस्तुत किया जाएगा।

इसी प्रकार आदिश्रव्य दीर्घा का कार्य भी भारत में संगीत के कालक्रमिक विकास को दिखाने के लिए प्राचीन वाद्य यंत्रों के संग्रह के प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वह एक 'नाद आकाश' (साउंडस्पेस) के माध्यम से मौखिक संगीत और वाद्यों को अधिक महत्व देगी और जीवन के संचालन में नाद और संगीत के महत्व को दर्शाएगी। इस प्रकार संगीत को दिक् और काल के संदर्भ में सजीव करने का प्रयास किया जाएगा।

उक्त दो प्रदर्शनी दीर्घाओं के अतिरिक्त, जो दृष्टि तथा नाद के समग्रवादी उपयोग के माध्यम से प्राचीन भूत को प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगी और इसीलिए उनको ये नाम (आदिदृश्य और आदिनाद) दिए गए हैं और भी कई गतिविधियां/प्रस्तुतियां/प्रदर्शन होंगे जिनके द्वारा प्राचीन कला व शिल्पकृतियों के साथ-साथ उसी कला या शिल्प के वर्तमान स्वरूप को भी प्रस्तुत किया जाएगा। ये कार्यक्रम समय-समय पर बदलते रहेंगे और इनके अंतर्गत भारत के और बाहर से भी कला, शिल्प, संगीत, नृत्य के व्यावहारिक निरूपण प्रदर्शन प्रस्तुत किए जाएंगे जिन से इनके अंतिम रूपों का ही नहीं बल्कि उन्हें तैयार करने की प्रक्रिया का भी पता चलेगा।

I. आदिदृश्य — शैलकला दीर्घा

गत वर्ष की रिपोर्ट में इस दीर्घा की रूपरेखा के साथ-साथ उसके सामान्य लक्ष्य, उन लक्ष्यों को प्राप्त करने की कार्य विधि और वांछित परिणामों का ब्यौरा इन चार अनुसंधान शीर्षों के अंतर्गत दिया गया था : (क) शैलकला अभिलेखागार, (ख) कार्यालयांतर्गत अनुसंधान परियोजनाएं, (ग) दीर्घा प्रदर्शन और (घ) कृत्रिम बुद्धि निवेश। आलोच्य वर्ष के दौरान आदिदृश्य दीर्घा के कार्य में जो प्रगति हुई उसका विवरण नीचे दिया जा रहा है :—

1. संकल्पनात्मक योजना

वर्ष के दौरान, शैल कला के अंतरसांस्कृतिक नमूने पर सूचना के संग्रह एवं प्रसार के लिए एक परियोजना के रूप में दीर्घा की अंतिम सफलता को ध्यान में रखते हुए अनेक प्रारूप तैयार किए गए। शैल कला के डेटाबेस, क्षेत्र अनुसंधान कार्यक्रम तथा प्रदर्शन दीर्घा के रूप में इस दीर्घा के विभिन्न कार्यों की योजना को अंतिम रूप दिया जा रहा है। संकल्पनात्मक योजना के अंतर्गत केन्द्र के परिसर में शैल कला के त्रि-आयामी प्रदर्शन का प्रारूप भी शामिल किया गया है।

2. ग्रंथसूची

विश्व की शैलकला के संदर्भों के कार्य प्रगति करता रहा और उन के कंप्यूटरीकरण का कार्य भी साथ-साथ चलता रहा है। अब तक कंप्यूटरीकृत की गई ग्रंथ सूची में राष्ट्रीय संग्रहालय पुस्तकालय, भारतीय सर्वेक्षण विभागीय पुस्तकालय, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पुस्तकालय, डक्कन कालेज पुस्तकालय तथा फ्रांसीसी शैल कला संबंधी संदर्भों का 1984 तक का काम पूरा हो चुका है। इन संदर्भों की संख्या कुल मिलाकर लगभग 1,000 है।

3. मानचित्र निर्माण

भारत में विभिन्न प्रदेशों में स्थित शैल कला स्थलों का एक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए 1990 में एक ऐसा मानचित्र तैयार करने का काम हाथ में लिया गया था। प्रथम चरण में शैल कला स्थलों की भौगोलिक जानकारी इकट्ठी की गई और इसकी सहायता से अब भारत के शैल कला स्थलों के विवरण का एक कच्चा नक्शा तैयार किया जा चुका है।

4. परियोजनाएं

केरल की शैल कला की खोज तथा उसके प्रलेखन के लिए डॉ. यशोधर मठपाल के मार्गदर्शन में एक परियोजना शुरू की गई है। इस परियोजना से अब तक अज्ञात रहे अनेक स्थलों का पता चलने और आदिदृश्य दीर्घा में संगृहीत शैल कला की रंगीन चित्रकारियों तथा स्लाइडों (रंगीन तथा सादी) के संग्रह में वृद्धि होने की आशा है।

उत्तरी चंबल घाटी के पांच स्थलों पर व्यापक रूप से क्षेत्र कार्य किया जा चुका है और इस क्षेत्र में उपलब्ध शैल कला की वीडियो फिल्म का प्रारूप तैयार किया जा चुका है। अब इस फिल्म का संपादन हो रहा है। यह वास्तव में भारत की शैल कला के प्रलेखन के क्षेत्र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं निर्णायक प्रयोग है।

5. संग्रह

आदिदृश्य दीर्घा के मौजूदा संग्रह (मुख्यत : जल रंग चित्रकारियों का मठपाल संग्रह) के अलावा, वेडनारिक संग्रह नामक एक अन्य संग्रह का कार्य विश्वभर से प्राप्त शैल कला की 223 रंगीन स्लाइडों के साथ प्रारंभ किया गया।

II. आदिश्रव्य — नाद दीर्घा

आदिश्रव्य दीर्घा, नाद एवं नाद की विभिन्न अभिव्यक्तियों एवं रूपों की एक स्थायी दीर्घा होगी। यह कार्यक्रम - ख के

अंतर्गत प्रदर्शन का दूसरा माध्यम होगी। इस परियोजना की रूपरेखा तैयार की जा रही है। इस बीच विख्यात संगीतज्ञ श्री राघव आर. मेनन द्वारा भारत के शास्त्रीय संगीत के 'इंदौर घराने' का अध्ययन अनुसंधान एवं प्रलेखन की सहायक परियोजना के रूप में प्रारंभ किया गया है।

श्री पीटर म्यूलर पैक ने वाराणसी नगरी का एक नाद-दृश्य प्रस्तुत किया। श्री पैक नाददीर्घा विकसित करने और 'नाद' विषयक ग्रंथसूची तैयार करने के कार्य में केन्द्र को सहायता देने के लिए सहमत हो गए हैं।

गारो समुदाय के वाद्य यंत्रों का एक संग्रह आदि श्रव्य दीर्घा के लिए प्राप्त कर लिया गया है।

गतिविधियां/प्रस्तुतियां

बाली द्वीप के इंडोनेशियाई सांस्कृतिक दल द्वारा प्रदत्त 'वायांग कुलित' (छाया पुत्तलिकाओं) को विधिवत भेंट किए जाने के लिए 11 जून, 1990 को एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इंडोनेशिया के राजदूत महामहिम डॉ. आई.वी. मंत्र ने वाद्ययंत्रों/गैंडर वायांग — तथा मंच सज्जा सामग्री के साथ ये पुत्तलिकाएं केन्द्र को सौंपी। इस समारोह में अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे, जैसे डॉ. लोकेश चन्द्र, यूनेस्को के निदेशक डॉ. डाकैच, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की महानिदेशक कु. वीना सीकरी।

स्वीडेन के विश्वविख्यात कलाकार डॉ. माइकेल मेश्के ने एक कक्ष को एक लघु पुत्तलिका रंगशाला का रूप दिया। उन्होंने इस रंगशाला के लिए उदारतापूर्वक प्रकाश यंत्र तथा अन्य उपकरण भेंट किए। इसका उद्घाटन 10 दिसम्बर, 1990 को श्री के.एल. कृष्णनकुट्टी पुलवूर तथा उनकी मंडली द्वारा प्रस्तुत केरल के 'तोलपावकूत' नामक छाया पुत्तलिका प्रदर्शन से किया गया।

एक अन्य पुत्तलिका कार्यक्रम पिंगुलि कुडल ग्राम (महाराष्ट्र) के श्री परशुराम विश्राम गंगवने तथा उनकी मंडली द्वारा 26 फरवरी, 1991 को मंचित किया गया।

वीडियोथोक का उद्घाटन 31 जनवरी, 1991 को किया गया। इस अवसर पर यूनानी पुत्तलिका चरित्र 'कारागिओज' पर एक वीडियो संग्रह दिखाया गया।

कार्यक्रम ग : जीवनशैली अध्ययन

लोक परम्परा

अब तक जनजातीय और लोक संस्कृति पर जो भी अध्ययन हुआ है वह सब अधिकतर एक ही दिशा में और एकांगी ही हुआ है, चाहे वह मानवशास्त्रीय दृष्टि से किया गया हो अथवा समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक, राजनैतिक, इतिहास या कला इतिहास की दृष्टि से। इन विषयों ने प्रत्येक कला के सार्वजनिक तथ्यों या बहुपक्षीय/बहुस्तरीय स्वरूप और विलक्षता का बहुत कम ध्यान रखा है। जनपद संपदा प्रभाग एक नया दृष्टिकोण, एक नई पद्धति अपनाना चाहता है, और वर्तमान पद्धतियों की जांच करके जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए वैकल्पिक मॉडल तैयार करने का प्रयास कर रहा है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि जीवन एकल आयामों या इकाइयों में बंटा हुआ नहीं है और न ही कोई एक मॉडल किसी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत कर सकता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति को एक सीमांकित स्थान में एक बहुआयामी प्रणाली मानता है।

इन अध्ययनों का उद्देश्य प्राकृतिक परिवेश, दैनिक जनजीवन, वार्षिक पंचांग तथा जीवन चक्र, विश्व दृष्टिकोण, ब्रह्मांड विज्ञान, सामाजिक संरचना, ज्ञान एवं कौशल, पारंपरिक प्रौद्योगिकी और कला अभिव्यक्तियों के बीच कई प्रकार के संबंध जोड़ना है। ये अध्ययन स्वरूप में बहुविषयक हैं और कलाओं के क्षेत्र में कौशलों और तकनीकों के अन्योन्याश्रय, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर एक दूसरे के असर और जनजातीय, ग्रामीण तथा शहरी परंपराओं मौखिक या लिखित के पारस्परिक प्रभाव को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को सामने रखकर और बहुविषयक रीति अपनाते हुए कई प्रायोगिक परियोजनाएं प्रारंभ की गई हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वान देश की विभिन्न संस्थाओं से लिए गए बहुविषयक अध्ययन दलों के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित कर रहे हैं। उन लोगों के साथ एक सार्थक संवाद स्थापित किया गया है जो जातीय वनस्पति विज्ञान, जातीय चिकित्सा/आयुर्विज्ञान, हिमालय अध्ययन तथा समुद्र विज्ञान के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

1. संथाल परियोजना

यह परियोजना पांच भागों (मॉड्यूल) में तैयार की गई है और इनके कार्य की प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है :—

(क) ग्रंथसूची

एक बहुभाषी ग्रंथसूची दो खंडों में तैयार की गई। प्रथम खंड में 743 संदर्भ हैं जिनमें पुस्तकों/प्रबंधों, लेखों, सरकारी अभिलेखों, शब्दकोशों तथा विश्वकोशों, व्याख्यानों, प्रायोजित परियोजनाओं, सम्मेलन में पढ़े गए शोध पत्रों और समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं की कतरनों के संबंध में लेखक तथा वर्णानुक्रम के विस्तृत ब्यौरे दिए गए हैं। द्वितीय खंड में लेखकानुसार सूचीबद्ध 534 संदर्भ दिए गए हैं।

(ख) थेसारस

पंचमहाभूत अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु से संबंधित पारिभाषिक शब्दों को वोडिंग रचित संथाली शब्दकोश से छांटा गया। श्रेणी कूट, श्रेणी विवरण, पारिभाषिक शब्दों तथा कुंजी शब्दों (संदर्भ में) के माध्यम से पुनः प्राप्ति के प्रयोजनों के लिए सॉफ्टवेयर विकसित किया गया। इन पंचभूतों का विश्लेषण 'बनम' के संदर्भ में शुरू किया गया है। बनम संथाल लोगों का एक वाद्य यंत्र है जिसे वे अपने भौतिक/शारीरिक अस्तित्व का ही विस्तार तथा एक जीवित मानव मानते हैं, और अपने अजीवित स्वजनों, (मृतक स्वजनों) के साथ संपर्क स्थापित करने का साधन समझते हैं।

(ग) मानचित्र निर्माण

बिहार में संथाल लोगों की जनसंख्या के विवरण को दर्शाने वाले पांच ब्यौरेवार नक्शे तैयार किए गए हैं।

(घ) संगीत

विश्वभारती के डॉ. ओंकार प्रसाद ने बोलपुर (जिला बीरभूम) में संथाल संगीत के प्रायोगिक अध्ययन का काम हाथ में लिया है। इस परियोजना के अंतर्गत संगीत तथा वाद्य यंत्रों की बहुभाषी ग्रंथसूची तैयार करने, वहां के पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं, जलवायु तथा अन्य भौतिक विशेषताओं का ब्यौरा इकट्ठा करने, उस क्षेत्र का नक्शा बनाने और संगीत के संदर्भ में पंच महाभूतों का शब्दकोश तैयार करने का काम शामिल है।

(ङ) जातीय-चिकित्सा विज्ञान

डॉ. एन. पटनायक ने उड़ीसा के संथाल लोगों में प्रचलित जनजातीय-चिकित्सा पद्धति तथा ब्रह्मांड विज्ञान का प्रायोगिक अध्ययन शुरू किया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत जनजातीय-चिकित्सा पद्धति विषयक बहुभाषी ग्रंथसूची तैयार करने, वहां के पेड़-पौधों तथा जीव-जंतुओं का ब्यौरा इकट्ठा करने, उस क्षेत्र की भौतिक विशेषताओं और संथाल जनसंख्या के वितरण का नक्शा बनाने और चिकित्सा पद्धतियों तथा मानव शरीर से संबंधित पंच महाभूतों पर एक शब्दकोश तैयार करने का काम शामिल है।

2. मणिपुर के पेइती

श्री अरिबाम श्याम शर्मा ने 'लाई हरौबा' नृत्योत्सव की फिल्म तैयार करने का काम पूरा कर लिया। इसमें कांगलाई, मोइरांग, चपका और काचिंग किस्मों के लाई हरौबा का छायांकन किया गया। दो घंटे की फिल्म का प्रारूप तैयार हो गया था। सामग्री की बहुलता को देखते हुए यह निर्णय किया गया है कि इससे तो दो फिल्में बनाई जा सकती हैं — एक 35 मिलीमीटर में 30 मिनट अवधि की कला फिल्म, और दूसरी 16 मिलीमीटर में दो घंटे की सामान्य फिल्म, जिसमें स्थानिक परिवर्तनों के साथ इस उत्सव का ब्यौरा दिया गया हो।

3. बाजरा परियोजना

श्री कोमल कोठारी द्वारा संचालित बाजरा परियोजना के छः मॉड्यूल हैं: (i) ग्रंथसूची संबंधी माड्यूल, (ii) भौतिक पर्यावरण विषयक मॉड्यूल, (iii) मानचित्रात्मक मॉड्यूल, (iv) पंचभूत और जीवनशैली संबंधी मॉड्यूल, (v) पौधा विषयक मॉड्यूल, और (vi) बाजरा तथा मानव के बीच पारस्परिक क्रिया।

बहुभाषी ग्रंथसूची के लिए 1500 संदर्भ इकट्ठे किए जा चुके हैं।

मानचित्र तैयार करने का काम भी शुरू हो गया है।

4. मुक्कुवर परियोजना

डॉ. जे. सेम्युअल ने दक्षिणी घाट पर रहने वाले समुद्री मछुआ समुदाय मुक्कुवर के अध्ययन का कार्य पूरा कर दिया है। अगले वर्ष के शुरू में परियोजना रिपोर्ट प्राप्त होने की आशा है।

5. अंगामी उपचार पद्धति

कनिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति योजना के अंतर्गत कुमारी विभा जोशी ने सितम्बर, 1990 में इस परियोजना का कार्य प्रारंभ किया था। कोहिमा जिले में 45 दिन का क्षेत्र कार्य किया गया जिसके उद्देश्य थे: (क) गंभीर अध्ययन के लिए ग्रामों का चुनाव, (ख) जड़ी-बूटी और शमन क्रिया दोनों पद्धतियों से परंपरागत उपचार करने वाले विभिन्न चिकित्सकों के बारे में सूचना इकट्ठी करना, और (ग) अंगामी उपचार कृतियों से संबद्ध सेक्रेन्यी उत्सव के ब्यौरों का पता लगाना। रोग के कारणों के बारे में आदिवासी धारणा तथा उसके उपचार से जुड़े हुए कर्मकांड और सेक्रेन्यी उत्सव के ब्यौरे के संबंध में प्रारंभिक निष्कर्षों की रिपोर्ट तैयार की जा चुकी है। छायांकन के माध्यम से प्रलेखन का कार्य भी पूरा हो गया है।

6. परंपरा का पुनर्निर्माण: बेल्लार नदी के थाले में पूर्व-ऐतिहासिक अन्वेषण

कनिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति योजना के अंतर्गत कुमारी मधुका गीताकृष्ण ने भूत और वर्तमान काल के पुरातत्वीय तथा मानव जाति वर्णनात्मक सर्वेक्षणों के माध्यम से बेल्लार नदी के थाले के निवासियों की जीवन शैली और उनके आवास की संभावित पद्धति के बारे में अध्ययन की योजना हाथ में ली है। अध्ययन संबंधी क्षेत्र कार्य प्रारंभ हो चुका है।

7. मानव पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक धरोहर

(i) *उत्तर कर्नाटक*

'मानव पारिस्थितिकी एवं लोक धरोहर' विषय पर गत वर्ष हुई कार्यशाला में बनाई गई चार परियोजनाओं में से तीन प्रारंभ की जा चुकी हैं:—

(क) "उत्तर कन्नड़ के पवित्र उपवन तथा पवित्र वृक्ष" — कर्नाटक विश्वविद्यालय के डॉ. एम.डी. सुभाषचन्द्रन द्वारा।

(ख) "वन्य इतिहास तथा कच्छ वनस्पति का इतिहास" — फ्रेंच संस्थान, पांडीचेरी के डॉ. जैक्यूस पौचपादास द्वारा।

(ग) "मानव पारिस्थितिकी तथा सांस्कृतिक धरोहर: भारतीय वैविध्य" — भारतीय विज्ञान संस्थान के प्रो. माधव गाडगिल द्वारा।

प्रारंभ में इनमें से प्रत्येक परियोजना छः महीने के लिए प्रायोगिक आधार पर शुरू की गई है। इस अवधि के दौरान परियोजनाओं के निदेशक इन मॉड्यूलों पर कार्य करेंगे: बहुभाषी ग्रंथसूची, अध्ययनाधीन क्षेत्र के पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं, जलवायु तथा अन्य पारिस्थितिक विशेषताओं का प्रलेखन, अध्ययनाधीन मानव जनसंख्या के वितरण और भौतिक विशेषताओं के सूक्ष्म मानचित्र तैयार करना और पंचमहाभूतों का शब्दकोश। इनकी रिपोर्ट अप्रैल/जून, 1991 तक प्राप्त हो जाने की आशा है।

(ii) *मध्य हिमालय क्षेत्र*

गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रो. आर.एस. नेगी मध्य हिमालय क्षेत्र में मनुष्य, पशु तथा प्रकृति के प्रतीकात्मक संबंध का अध्ययन कर रहे हैं। जुलाई, 1991 के अंत तक उनकी रिपोर्ट प्राप्त हो जाने की आशा है।

8. कर्नाटक के लोहार

डॉ. जैन ब्रौवर द्वारा कर्नाटक के लोहारों का एक प्रायोगिक अध्ययन किया जा रहा है। इस अध्ययन के द्वारा ज्ञानात्मक प्रतिरूप और वास्तविक जीवनशैलियों के प्रतिरूपों के बीच के पहलुओं का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान की रीति विकसित की जाएगी और लोहार समुदाय के प्रचलित तकनीकी शब्दों का संकलन किया जाएगा। आशा है, यह रिपोर्ट सितम्बर, 1991 तक पेश कर दी जाएगी।

9. अंतर्जात संकल्पनाओं का शब्दकोश

उत्तर-पूर्व भारत में अंतर्जात संकल्पनाओं का शब्द कोश तैयार करने की प्रायोगिक परियोजना का कार्य उत्तर-पूर्वी पहाड़ी विश्वविद्यालय के प्रो. ए.पी. सिन्हा द्वारा हाथ में लिया गया है। यह अध्ययन खासी, जयन्तिया तथा गारो पहाड़ियों पर केन्द्रित है। रिपोर्ट के जुलाई, 1991 के अंत तक प्राप्त हो जाने की आशा है।

क्षेत्र संपदा

1. ब्रज-नाथद्वारा परियोजना

यह परियोजना वृंदावन के श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के श्री श्रीवत्स गोस्वामी के सहयोग से कार्यान्वित की जा रही है। इसमें सात मॉड्यूल हैं: (क) बहुभाषी ग्रंथसूची, (ख) भौगोलिक प्रांचल (पैरामीटर) तथा अर्थ, (ग) स्थापत्य तथा पुरातत्वीय पक्ष, ऐतिहासिक विश्लेषण सहित, (घ) मंदिर एक जीवंत अस्तित्व के रूप में, (ङ) मौखिक परंपराओं का प्रलेखन, (च) ब्रज में मंदिर संरचना का आर्थिक-सामाजिक स्वरूप, और (छ) कला, संगीत, नृत्य तथा पाक प्रणाली।

इन कार्यों में से निम्नलिखित चार में हुई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है:—

(क) बहुभाषी ग्रंथसूची

3,000 प्रविष्टियों वाली सटिप्पणीक बहुभाषी ग्रंथसूची के प्रथम खंड की जांच तथा संपादन का कार्य चला रहा है। आशा है, यह खंड अगले वर्ष के प्रारंभ में प्रकाशित हो जाएगा। 'भूमिका' नामक उप-मॉड्यूल का काम शुरू हो चुका है। इसका उद्देश्य मूल रूप में बंगला लिपि में उपलब्ध तीन संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद करना है। इनमें से 'नाट्य चंद्रिका' का काम डॉ. बी.वी. मिश्र द्वारा संपन्न कर दिया गया है। 'भक्ति रसामृत सिंधु' और 'उज्ज्वल नीलमणि' का काम डॉ. प्रेमलता शर्मा, डॉ. डी. हैबरमैन और डॉ. नील डेलमैनिको (संयुक्त राज्य अमेरिका) को सौंपा गया है। तीनों ग्रंथों में मूल पाठ के साथ अंग्रेजी तथा हिन्दी अनुवाद भी दिया जाएगा।

(ख) स्थापत्य तथा पुरातत्वीय पक्ष, ऐतिहासिक विश्लेषण सहित

वृंदावन के प्रमुख मंदिरों में से गोविंद देव मंदिर की स्थापत्य कलात्मक चित्रकारियों का काम नई दिल्ली के योजना एवं वास्तुकला विद्यालय की कुमारी नलिनी ठाकुर और उनके दल द्वारा लगभग पूरा कर दिया गया है। इसका विश्लेषण बाद में प्रो. जार्ज मिचेल द्वारा किया जाएगा। इन चित्रकारियों और उनके विश्लेषण को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का विचार है। गोविंद देव के मंदिर पर अप्रैल, 1991 में वृंदावन में एक संगोष्ठी आयोजित करने का कार्यक्रम बनाया गया है। इस संगोष्ठी में आमंत्रित करने के लिए 30 विद्वानों को चुना गया है। इसी ग्रंथ के अनुपूरक के रूप में 'स्टाइलिस्टिक स्टडी ऑफ दि सिक्सटीन्थ एंड सेवनटीन्थ सैन्चुरी टेंपल्स ऑफ ब्रज रीजन' (ब्रज मंडल के सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी के मंदिरों का शैलीगत

अध्ययन) नामक पुस्तक प्रकाशित की जाएगी। स्थापत्य विषयक परिभाषिक शब्दकोश बनाने का काम राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के प्रो. आर. नाथ को सौंपा गया है।

(ग) मंदिर : एक जीवंत अस्तित्व के रूप में

राधारमण मंदिर की नित्य सेवा तथा उत्सव के ऑडियो-वीडियो प्रलेखन का काम पूरा हो चुका है और उसका वीडियो कैसेट प्राप्त हो गया है। श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के पास उपलब्ध ब्रज की ऑडियो-वीडियो सामग्री और स्लाइडों के संग्रह की 'रूपवाणी' कार्यक्रम के अंतर्गत सूची तैयार की जा रही है।

'सांझी कला' के प्रलेखन का कार्य गत वर्ष प्रारंभ हुआ था। श्री असीम कृष्ण द्वारा इसका पाठ तैयार करने का काम अब पूरा हो चुका है। इस प्रलेख में शामिल किए जाने वाले छायाचित्र कुमारी रोबिन बोचा के ब्रज विषयक फोटोग्राफों के संग्रह में से चुने जाएंगे।

(घ) मौखिक परंपराओं का प्रलेखन

यह कार्य प्रो. सी.बी. रावत द्वारा किया जा रहा है। एतदर्थ प्रश्नावलियां तैयार की जा चुकी हैं। मंदिर के कर्मकांडों के विषय में पुरानी पीढ़ी के पुजारियों के साथ किए गए साक्षात्कार की ऑडियो रेकार्डिंग और मंदिर के परिसर के भीतर पूजा, कीर्तन, नृत्य आदि के कार्यक्रमों के लिए निर्धारित स्थानों के मानचित्र तैयार करने की योजना बनाई गई है।

2. बृहदीश्वर

इस परियोजना के समन्वयकर्ता डॉ. आर. नागस्वामी हैं। इसकी संकल्पनात्मक योजना में निम्नलिखित मॉड्यूल हैं : (क) गौण स्रोतों से बहुभाषी ग्रंथसूची; (ख) पुरालेखों तथा शिलालेखों संबंधी सामग्री; (ग) पुरातत्वीय रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों का प्रलेखन; (घ) मंदिर की मूर्तियों, प्रस्तर कलाकृतियों, कांस्य प्रतिमाओं, भित्तिचित्रों का अध्ययन; (ङ) आगमों और कर्मकाण्डों की जीवंत परंपराओं के संदर्भ में वास्तु तथा शिल्प पक्षों का अध्ययन (जिससे जीवंत अस्तित्व का मॉड्यूल बन सके); (च) भौतिक एवं मानसिक/अतिभौतिक स्तर से संबंधित अध्ययन, अर्थात् पूजा तथा पर्वों की विभिन्न अवस्थाओं का प्रलेखन; (छ) संगीत तथा नृत्य की परंपरा का संपूर्ण सर्वेक्षण, और (ज) 18वीं तथा 19वीं शताब्दियों के दौरान तंजावुर तथा बृहदीश्वर मंदिर का सामाजिक, राजनीतिक तथा पारिस्थितिक इतिहास।

इन कार्यों से निम्नलिखित माड्यूलों में प्रगति हुई है :—

(क) गौण स्रोतों के बहुभाषी ग्रंथसूची

प्राथमिक तथा गौण दोनों प्रकार के स्रोतों की बहुभाषी ग्रंथसूची केन्द्र में तैयार की जा चुकी हैं। सटिप्पणीक ग्रंथसूची मद्रास में तैयार की जा रही है।

(ख) पुरालेखों तथा शिलालेखों संबंधी सामग्री

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, मैसूर के डॉ. के.बी. रमेश ने मंदिर में स्थित शिलालेखों का काम शुरू कर दिया है।

(ग) पुरातत्वीय रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों का प्रलेखन

इकोल फ्रैंसेज द एक्सट्रीम ओरिएंट, पांडीचेरी के प्रो. पिचर्ड और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शोध अध्येता श्री अनूप देव ने मंदिर के पुरातत्वीय रेखाचित्रों के संबंध में 80 प्रतिशत से अधिक काम पूरा कर लिया है। प्रतिमाओं के छायांकन का कार्य भी साथ-साथ चलता रहा है।

(घ) मंदिर की मूर्तियों, प्रस्तर कलाकृतियों, कांस्य प्रतिमाओं और भित्तिचित्रों का अध्ययन

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग से भित्तिचित्रों के छायांकन के लिए अनुमति प्राप्त कर ली गई है।

(ङ) जीवंत अस्तित्व के रूप में मंदिर

स्व. (श्री जे. षड्गोपन द्वारा संगृहीत कुंभाभिषेकों की फिल्मों को प्राप्त करने के लिए बातचीत में प्रगति हुई है। उत्सवों के वीडियो प्रलेखन तथा कार्यशाला आयोजन के लिए योजना तैयार की जा रही है।

कार्यक्रम घ : बाल जगत

इस कार्यक्रम का उद्देश्य पुत्तलिकला, पहेलियों तथा खेलों जैसे विभिन्न कार्यकलापों के माध्यम से बच्चों को जनजातीय तथा ग्रामीण कला की समृद्ध धरोहर से परिचित कराना है जो इस समय उनके स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है।

1. पहेलियां और खेल

इस श्रेणी के अंतर्गत दो परियोजनाएं हाथ में ली गई हैं :—

(क) अक्षरस्तंभ, जिसका उद्देश्य बच्चों को भारत की विभिन्न लिपियों से परिचित कराना है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई के अनुसंधान एवं प्रलेखन विभाग से यह परियोजना हाथ में लेने के लिए निवेदन किया गया है। यह काम उस संस्थान के प्रो. आर.के. जोशी द्वारा संपन्न किया जाएगा।

(ख) कुम्हार की कला में प्रयुक्त पांच तत्वों से बच्चों को अवगत कराने के उद्देश्य से एक पट्ट खेल तैयार करने का काम बाल खेलों के विशेषज्ञ श्री बृज दीपक को सौंपा गया है। इस परियोजना का काम पूरा होने वाला है।

2. पुत्तलिकला

यह परियोजना लोकपरंपरा विभाग के कार्यक्रमों की अनुपूर्ति करने के लिए बनाई गई है। इसका उद्देश्य पुत्तलिकला के माध्यम से बच्चों को भारत की समृद्ध कला धरोहर से अवगत कराना है। इसमें जीवनशैली अध्ययनों से संगृहीत स्रोत सामग्री का उपयोग किया जाएगा।

(क) पुत्तलिकला कार्यक्रम तथा रंगशाला की संकल्पना तैयार करने में सहायता देने के लिए स्वीडन के प्रख्यात विद्वान तथा पुत्तलिकलाविद श्री माइकेल मेरके को फोर्ड फाउंडेशन अनुदान के अंतर्गत छः सप्ताह के लिए आमंत्रित किया गया था। उनके अवास के दौरान पुत्तलिकला परियोजना की संकल्पनात्मक योजना तैयार की गई। इसके अलावा, श्री मेरके ने केन्द्र में एक पुत्तलिकला रंगशाला की स्थापना में अपनी तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान की, जिसके लिए स्वीडन की सरकार ने बहुमूल्य प्रकाश उपस्कर भेंट किया।

(ख) पुत्तलिकला से संबंधित 1,652 पुस्तकों तथा निबंधों के बारे में जानकारी देने वाला एक विशद ग्रंथ तैयार किया गया।

(ग) पुत्तलिकला पर मुद्रित तथा अमुद्रित सामग्री, समाचार पत्रों की कतरनों, ऑडियो रेकार्डिंग और वीडियो टेपों तथा पुत्तलियों का एक महत्वपूर्ण संग्रह तैयार किया गया।

(घ) केन्द्र ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद तथा संगीत नाटक अकादमी द्वारा सितम्बर, 1990 में प्रायोजित भारत अंतर्राष्ट्रीय पुत्तलिकला महोत्सव में भाग लिया। 30 देशों के पुत्तलिकलाकार, विद्वान, विशेषज्ञ इस अवसर पर इकट्ठे हुए। इस संपूर्ण कार्यक्रम का प्रलेखन किया गया और साक्षात्कार तैयार किए गए। फलस्वरूप केन्द्र में 700 छायाचित्रों, 1000 स्लाइडों, 14 पुस्तकों, पुस्तिकाओं तथा पोस्टरों से एक श्रव्य-दृश्य अनुभाग बन गया। कुछ विशेषज्ञों को केन्द्र में भी आमंत्रित किया गया। उन्होंने सूचना के आदान-प्रदान के लिए उत्कट इच्छा प्रकट की। अर्जेन्टीना, आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, कनाडा, चिली, मिस्र, इंडोनेशिया, माले, फिलीपीन, रूमानिया, दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, तुर्की, सोवियत संघ और वियतनाम से पुत्तलिकाओं के उपहार प्राप्त हुए।

संगोष्ठियों/कार्यशालाओं में भाग लेना

1. डॉ. वी.एन. सरस्वती ने निम्नलिखित अकादमिक कार्यक्रमों में भाग लिया :—
   (क) आचार्य नरेन्द्र देव समाजवादी संस्था तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा संयुक्त रूप से अप्रैल, 1990 में वाराणसी में 'भारतीय संस्कृति तथा परिवर्तन की चुनौतियां' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी।
   (ख) यूक्रेनियन सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी और लोक साहित्य एवं कला अध्ययन संस्थान तथा यूनेस्को के लिए यूक्रेनियन सोवियत संघ आयोग द्वारा "समकालीन विश्व के रूप में लोक साहित्य" विषय पर यूरोपीय परिचर्चा (सिंपोजियम)।
   (ग) नवम्बर 1990 में पटना में मिथिला महिला महाविद्यालय तथा बिहार एजूकेशनल गिल्ड के तत्वावधान में एल.पी. विद्यार्थी स्मारक व्याख्यान दिया।

2. पुणे में एकीकृत नदी थाला योजना तथा प्रबंध का प्रशिक्षण देने के लिए आयोजित तृतीय प्रस्तावना पाठ्यक्रम के दौरान डॉ. कनक मीतल ने "सामाजिक आवासन तथा जल स्रोत पुनर्व्यवस्थापन परियोजना विषय पर भाषण दिया और 8 फरवरी, 1991 को केन्द्रीय प्रशिक्षण एकक में नदी थाला योजना संबंधी अध्ययन विशेष पर विचार-विमर्श में भाग लिया।

3. डॉ. अजय प्रताप ने टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, मुंबई में 21 से 23 दिसम्बर, 1990 तक 'जातीयता तथा पहचान का सामाजिक निर्माण' विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया और "पहाड़िया समुदाय की उत्पत्ति के कुछ पक्ष" शीर्षक शोधपत्र प्रस्तुत किया।

प्रशिक्षण

नई दिल्ली के राष्ट्रीय सूचना केन्द्र में "लोक प्रशासन में विशेषज्ञ प्रणालियों के अनुप्रयोग" विषय पर फरवरी, 1990 में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. कनक मीतल ने भाग लिया।

IV. कला दर्शन

यह प्रभाग रचनात्मक अभिव्यक्तियों तथा रूपों, घटनाओं तथा गतिविधियों के लिए मंच तथा स्थल उपलब्ध कराता है। जब संस्था पूरी तरह से स्थापित हो जाएगी तब कला दर्शन प्रभाग में तीन बड़ी रंगशालाएं तथा कला दीर्घाएं होंगी।

कार्यक्रम क : संग्रह

आलोच्य अवधि में, बुद्धि थापा की ब्रह्माण्डीय कंपन विषयक दो चित्रकारियां और कला प्रदर्शनी पर सरनजीत सिंह का एक रेखाचित्र केन्द्र के संग्रहों में जोड़े गए।

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां एवं प्रदर्शनियां

नवम्बर, 1990 में 'काल' (समय) विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी और एक प्रदर्शनी का मिलाजुला कार्यक्रम आयोजित किया गया। 20 नवम्बर से 26 नवम्बर तक आयोजित इस संगोष्ठी में काल विषय के सभी पक्षों पर बौद्धिक स्तर पर गहराई से विचार-विमर्श हुआ और उपस्थित विद्वानों ने प्राचीन तथा आधुनिक सभ्यताओं में विज्ञान, दर्शन, धर्म तथा कलाओं में काल संबंधी नानाविध धारणाओं तथा आयामों की खोज करने का प्रयास किया। भारत तथा विदेशों के साठ से अधिक विद्वानों ने इसमें भाग लिया जिनमें विशिष्ट वैज्ञानिक, दार्शनिक, कला इतिहासविद, समाजशास्त्री, लेखक, संगीतज्ञ, चित्रकार तथा धार्मिक नेता शामिल थे। इनमें से कुछ लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों के नाम हैं : प्रो. दौलतसिंह कोठारी, डॉ. राजा रामन्ना, प्रो. एम.जी.के. मेनन, प्रो. डेविड पार्क, प्रो. गर्ट एच. म्यूलर, प्रो. सैयद हुसैन नस्र, प्रो. आर. पणिक्कर, डॉ. कर्णसिंह, डॉ. कैपलीन रैने, प्रो. जे.एम. मैलविले, डॉ. राम कुमारस्वामी, प्रो. टी.एस. मैक्सवेल, प्रो. फ्रिट्ज स्टाल, डा. जी.सी. पांडे, डा. वी.एन. मिश्र,

डा. प्रेमलता शर्मा, डा. बेट्टिना बॉमर, डा. आइरिन विन्टर, डा. माइकेल माइस्टर, प्रो. माइकेल मिश्के, डा. एस.सी. मलिक, डा. पी.पी. अग्रवाल, डा. जॉन एरिक और डॉ. पी.एम. भार्गव।

संगोष्ठी का उद्घाटन 20 नवम्बर, 1990 को डॉ. राजा रामन्ना द्वारा किया गया। इसमें छः विषयों पर विचार-विमर्श तथा वार्तालाप हुआ, अर्थात् (1) काल : धारणाएं, (2) काल : चैतन्य, (3) काल : मिथक तथा इतिहास, (4) काल : रचनात्मक प्रक्रिया, (5) काल : रचनात्मक प्रतिक्रिया, (6) समय : अनुभवातीतत्व तथा सर्वव्यापकत्व। विभिन्न विषयों पर कोई 55 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।

संगोष्ठी के अवसर पर काल के विषय पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। उनमें शामिल थे : 'ताल वाद्य' कार्यक्रम, मणिपुरी नृत्य कार्यक्रम 'महारास', एलबर्ट मेयर द्वारा रूपांकित 'काल क्रमण' (टाइम वॉक), प्रो. पीटर पैक द्वारा प्रस्तुत ध्वनिदर्शी कार्यक्रम — 'हीयर इंडिया' (भारत को सुनो)। इनके अलावा दो फिल्में दिखाई गईं — कुमार शाहनी की फिल्म 'ख्यात गाथा' और हेनिंग स्टेगम्यूलर तथा जी.डी. सोनधाइमर की फिल्म — 'वारि — एन इंडियन पिलिग्रिमेज।"

संगोष्ठी परमपावन दलाई लामा के समापन अभिभाषण के साथ 26 नवम्बर, 1990 को समाप्त हुई।

व्याख्यान

काल विषयक संगोष्ठी के दौरान केन्द्र ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर तथा इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर के सहयोग से भारतीय सूचना केन्द्र के सभागार में प्रो. सैयद हुसैन नस्र का व्याख्यान कराया। प्रो. नस्र संयुक्त राज्य अमेरिका के जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय में इस्लामिक अध्ययन विभाग के प्रोफेसर हैं। प्रो. नस्र के भाषण का विषय था, "धर्म तथा पर्यावरणिक संकट : एक प्राच्य दृष्टिकोण।" सामान्य जनता के अलावा संगोष्ठी में आए सभी प्रतिनिधि इस व्याख्यान में उपस्थित थे।

पुस्तक विमोचन

'काल' विषयक संगोष्ठी के अवसर पर केन्द्र द्वारा प्रकाशित कई पुस्तकों का विमोचन हुआ। परमपावन श्री दलाई लामा ने ए.के. कुमारस्वामी की 'टाइम एंड ईटर्निटी' और 'वॉट इज सिविलाइजेशन ?' नामक दो पुस्तकों का विमोचन किया। साथ ही प्रो. जी.डी. सोनधाईमर ने डॉ. फ्रांचिस्को दि ओराजी की पुस्तक 'रबारी — ए पैस्टोरल कॉम्यूनिटी ऑफ कच्छ', डॉ. कैथलीन रैने ने प्रो. सैयद हुसैन नस्र की कृति 'इस्लामिक आर्ट एंड स्पिरिचुअलिटी', डॉ. दौलतसिंह कोठारी ने प्रो. जे.एम. मैलविले की पुस्तक "टाइम एंड ईटर्नल चेंज' और डॉ. राम पो. कुमारस्वामी ने एलिस बोनर की रचना 'प्रिंसिपल्स ऑफ कांपोजीशन इन हिन्दू स्कल्पचर' का विमोचन किया।

प्रदर्शनी

केन्द्र ने बहु-माध्यमिक प्रस्तुतियों के साथ 'काल' विषय पर एक प्रदर्शनी आयोजित की। यह प्रदर्शनी पहले 11 दिसम्बर, 1990 से 21 जनवरी, 1991 तक खुली रहने वाली थी। किन्तु विद्वानों तथा जनसामान्य की मांग पर इसकी अवधि दो बार बढ़ाई गई, पहले 11 फरवरी तक और फिर 28 फरवरी 1991 तक।

प्रदर्शनी में मानव विचार तथा अनुभव, विज्ञानों तथा कलाओं, संपूर्ण दृश्य एवं इन्द्रियातीत का समय को आधारभूत तत्व मानते हुए अन्वेषण किया गया था। इस अन्वेषण के पीछे मूल उद्देश्य था — विभिन्न संस्कृतियों, विश्वासों और विद्याओं में बोध की समरूपता का पता लगाना। यह बहु-माध्यमिक प्रस्तुति मनुष्य के इस बीजभूत चिंतन के संबंध में इन समरूपताओं को उजागर करने का प्रयास थी।

इस प्रदर्शनी की विभिन्न दीर्घाओं के माध्यम से समय संबंधी अनुभव को अभिव्यक्त किया गया। ये दीर्घाएं समय के ब्रह्माण्ड वैज्ञानिक, भूगर्भीय, जैविक, सामाजिक आदि विभिन्न पक्षों को और काल शून्य को भी उजागर करती है। प्रदर्शनी नौ

अनुभागों में विभाजित थीं, अर्थात हृदय, सृष्टि, स्पंदन, कालबोध, दिक्काल, कालमान, कालक्रम, काल अनुभूति, काल शून्य और काल पूर्ण।

'काल' विषयक प्रदर्शनी की विलक्षण आवश्यकता को पूरा करने के लिए गारे/चूने से एक भवन बनाया गया जिसमें परंपरागत भवन निर्माण शिल्प तथा भवन निर्माण प्रौद्योगिकी की आधुनिक संकल्पना का सम्मिश्रण है। इस संरचना के चारों ओर एक समेकित भूदृश्य भी बनाया गया है जो पर्यावरण को सार्थक एवं आनंददायक बनाता है।

प्रदर्शनी के एक अंग के रूप में, एक रंगमंडल बनाया गया है जिसकी संकल्पना नागार्जुन कुंड से ली गई है। यह रंगमंडल इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के स्थायी भवन परिसर का एक महत्वपूर्ण अंग है। जब तक केन्द्र का स्थायी भवन परिसर नहीं बन जाता, यह रंगमंडल केन्द्र की आवश्यकताओं को पूरा करेगा। इसी प्रकार, गारे/चूने से बना हुआ भवन भी केन्द्र द्वारा समय-समय पर लगाई जाने वाली प्रदर्शनियों के काम आएगा।

आम जनता में से अनेक लोगों, विश्व के सभी भागों से आए विद्वानों, भारत के शिक्षा विशारदों, स्कूलों तथा कॉलेजों के छात्रों और विशिष्ट महानुभावों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उनमें से कुछ की विचार टिप्पणियां नीचे दी जा रही हैं :—

"एक अन्य उत्कृष्ट प्रदर्शनी, जिसके लिए कपिलाजी और उनके सहयोगीगण प्रशंसा के पात्र हैं। इसमें अमूर्त संकल्पनाओं को एक अत्यंत कल्पनाशील तरीके से प्रस्तुत किया गया है। यह प्रदर्शनी हमें कुछ ही मिनटों में दिक्काल एवं सृष्टि के संपूर्ण शाश्वत रहस्य के आरपार ले जाती है।"

"यह एक ऐसी प्रदर्शनी है जिसे देखने के लिए आशा है, लोग उमड़ पड़ेंगे। हम अपने तुच्छ धंधों में इतने डूबे रहते हैं कि हमें कभीकभार उनसे उभर कर मानवीय चेतना और सभ्यता के व्यापक परिदृश्य को भी ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह विलक्षण प्रदर्शनी वही सब करने में हमारी सहायता करती है।"

डॉ. कर्णसिंह

"अति प्रेरणाप्रद। गहन चिंतन का अवसर प्रदान करती है कि काल क्या है, भौतिक, आध्यात्मिक तथा अतीन्द्रिय विश्व की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में इसका अर्थ क्या है और यह समस्त विश्व को परस्पर जोड़ते हुए किस प्रकार व्याप्त है।"

प्रो. एम.जी.के. मेनन

"यह काल विषयक एक अति उत्तम प्रदर्शनी है। यह समय की संकल्पना के विकास के विषय में एक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती है।"

श्री आई.बी. मंत्र
इंडोनेशियाई राजदूत

"इसने तो मानो मुझे पकड़ ही लिया। मैंने इसके नाना रूपों का अवलोकन किया। यह तो वास्तव में एक अभिभूत कर देने वाला अनुभव था। आपने मुझ जैसे फिसड्डी से बार-बार अनुनय किया, एतदर्थ धन्यवाद। मैं तो मुश्किल से ही कहीं जाता हूं। लेकिन यह प्रदर्शनी वास्तव में अवलोकनीय थी। इसमें चिंतन के लिए, जानने, सीखने और एकात्मता महसूस करने के लिए बहुत कुछ था।"

डॉ. रजनी कोठारी

"काल की संकल्पनाओं को अभिव्यक्त करने वाली इस अनुपम बहुमाध्यमिक प्रदर्शनी के लिए मेरी ओर से बधाई।"

डॉ. एम. डरकैंच
निदेशक, यूनेस्को

"इस प्रदर्शनी की संकल्पना महत्वाकांक्षी है और उसका निष्पादन उत्कृष्ट कोटि का है। बधाइयां।"

श्री एम.आर. कोल्हरकर
सलाहकार (शिक्षा), योजना आयोग

"एक आनंददायक अनुभूति ! कपिलाजी, बधाइयां। एक अविस्मरणीय अनुभव।"

श्री एलिंग देसाउ
यू.एन.डी.पी.

"प्रदर्शनी वास्तव में विलक्षण है। मेरे विचार से इसके लिए काफी चिंतन और कल्पनाशीलता का सहारा लिया है। इसमें आप की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। मुझे विश्वास है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी की आत्मा को इससे पूर्ण संतुष्टि प्राप्त होगी।"

श्री टी.एन. खुशू
टाटा ऊर्जा अनुसंधान संस्थान
नई दिल्ली

"सचमुच एक उद्बोधक एवं आनंदप्रद अनुभव। दृश्य-श्रव्य प्रभाव तो मानो हमें दूसरे संसार में ही ले गए। मनमोहक एवं अत्यंत दार्शनिक। हम बार-बार देखना चाहेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद।"

मंजीरा, अन्विता, पूजा, शालिनी, सोनाली,
शिल्पा, मोनोषा, भावना, शिप्रा, लतिका, रुचिका
छात्राएं: मॉडर्न स्कूल, बसंतबिहार, नई दिल्ली

"अत्यंत चित्ताकर्षक ! असाधारण जानकारी से भरपूर। देख कर आश्चर्यचकित हो गई।"

गुंजन चावला
छात्रा: एयरफोर्स बाल भारती स्कूल, नई दिल्ली

"यह प्रदर्शनी दर्शक को एक अनोखी दुनिया में, एक पूर्णतः अज्ञात स्थिति में ले जाती है — साधारण जीवन में ऐसा अनुभव दुर्लभ है — बहुत ही प्रभावोत्पादक।"

कु. माधुरी
छात्रा: रामजस स्कूल,
पूसा रोड़, नई दिल्ली

निम्नलिखित संस्थानों ने 'काल' कार्यक्रमों : प्रदर्शनी एवं संगोष्ठी में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को सहयोग दिया :—

1. भारतीय अध्ययनों का अमेरिकी संस्थान
2. ब्रिटिश कौंसिल प्रभाग
3. डेवलपमेंट ऑल्टरनेटिव्ज
4. जर्मन अनुसंधान समाज
5. भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद्
6. इंडिया इंटरनेशनल सेंटर
7. मैक्समूलर भवन
8. नूफिक, ऐमसटर्डम
9. ऑरिओल डिजाइन
10. यूनेस्को
11. भारत अमेरिका उप-आयोग

आगन्तुक महानुभाव

सोवियत संघ के लेखिका संघ की सचिव श्रीमती मौरा सैलगैनिक केन्द्र के अतिथि के रूप में 24 जनवरी, 1991 से 13 फरवरी, 1991 तक भारत दर्शन पर रहीं। भारत में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा सोवियत

संघ के बीच संचालित विभिन्न संयुक्त प्रकाशन कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने काल प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया।

जर्मनी के बोन विश्वविद्यालय में प्राच्य विभाग के निदेशक तथा प्राच्य कला इतिहास के आचार्य प्रो. टी.एस. मैक्सवेल 'काल' विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सहायता देने के लिए अगस्त व नवम्बर, 1990 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के निमंत्रण पर दिल्ली पधारे। प्रो. मैक्सवेल ने प्रतिनिधियों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं, सुझावों तथा पत्रों के संदर्भ में संगोष्ठी के मूल विषयक-पत्र को संशोधित किया और संगोष्ठी में एक शोधपत्र भी प्रस्तुत किया।

मेरिओनेट्टेटर्न (स्वीडन) के डॉ. माइकेल मेस्के, जो पुत्तलिकला के विशेषज्ञ हैं, केन्द्र के अतिथि के रूप में भारत आए और 2 नवम्बर से 10 दिसम्बर, 1990 तक यहां रहे। अपने भारत प्रवास के दौरान उन्होंने 'काल' विषयक संगोष्ठी में भाग लेने के अलावा, एक लघु पुत्तलिका रंगशाला का भी निर्माण किया।

कार्यक्रम ग : प्रलेखन

विभिन्न अभिकरणों ने उस सामग्री में बहुत दिलचस्पी दिखलाई जो केन्द्र द्वारा आयोजित प्रदर्शनियों के लिए तैयार की गई थी। आशा है कि 'आकार' तथा 'काल' प्रदर्शनियों की सुप्रलेखित सामग्री से कुछ अत्यंत रोचक एवं शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी बाल फिल्मों का निर्माण हो सकेगा।

कार्यक्रम घ : कार्यवृत्त तथा प्रकाशन

केन्द्र द्वारा 1986 में आयोजित 'आकाश' संगोष्ठी में प्रस्तुत की गई सामग्री पर आधारित एक पुस्तक 'कॉन्सेप्ट्स ऑफ स्पेस — एन्शिएंट एंड मॉडर्न' (आकाश विषयक संकल्पनाएं — प्राचीन एवं अर्वाचीन) उसके प्रकाशक मैसर्स अभिनव पब्लिकेशन्स से प्राप्त हो चुकी है।

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भवन परिसर के लिये अन्तर्राष्ट्रीय डिजाइन प्रतियोगिता में प्राप्त डिजाइन-प्रविष्टियों का प्रकाशन अपने अन्तिम चरण में है। इस कार्य में 194 प्रविष्टियों की सावधानीपूर्वक छानबीन, उपर्युक्त चित्रों का चयन तथा लेखों की सावधानीपूर्वक प्रस्तुति की गई ताकि पुस्तक डिजाइन-प्रविष्टियों का मात्र संग्रह न रह कर विद्यार्थियों एवं कार्यरत वास्तुविदों के लिये मार्गदर्शिका सिद्ध हो सके।

आर्थिक सहायता

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने निम्नलिखित संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी :—

1. राष्ट्रीय विज्ञान प्रौद्योगिकी और विकास अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली (नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइन्स टेक्नॉलोजी एण्ड डेवेलपमेन्ट स्टडीज़, नई दिल्ली) को "लौकिकता एवं तर्कसंगत विन्यास : एक भारतीय परिप्रेक्ष्य (टेम्पोरेलिटी एण्ड लॉजिकल स्ट्रक्चर : ऐन इण्डियन पर्सपेक्टिव) विषय पर संयुक्त कार्यशाला आयोजित करने के लिये।
2. जादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता को 'सृष्टि' विषय पर संयुक्त कार्यशाला आयोजित करने के लिये।
3. केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, वाराणसी (सेन्ट्रल इन्स्टीट्यूट ऑफ हायर तिब्बतन स्टडीज़, वाराणसी) को "बौद्ध परम्परा में काल की संकल्पना" विषय पर संयुक्त संगोष्ठी आयोजित करने के लिये।

आगामी कार्यक्रम

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अभिलेखागार में बहुमूल्य छायाचित्रों का संग्रह है, जिसमें भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों के छायाचित्र; भारत के प्रथम पेशेवर छायाचित्रकार तथा निज़ाम दरबार के राजा लाला दीनदयाल के छायाचित्रों का संग्रह;

सामाजिक-राजनैतिक तथा भारतीय राजाओं का कार्टियर ब्रेज़ों संग्रह; तमिलनाडु के कोलम पर मार्था स्टूवान के चित्र तथा कच्छ के चरवाहा समुदाय राबाड़ी पर फ्लावोनी के मूल छायाचित्र संग्रहीत हैं। इन संग्रहों को प्रदर्शनियों के माध्यम से जनता तक पहुंचाने का प्रस्ताव है। वर्ष 1991-92 के अन्य कार्यक्रमों की योजना इस प्रकार है:—

(क) 'काल' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में कुछ चुने हुए लेखों का प्रकाशन।

(ख) 'काल की संकल्पना' विषय पर शैक्षिक कार्यक्रम का विकास।

V. सूत्रधार

सूत्रधार नीति निर्माण, प्रशासन तथा समन्वय संबंधी कार्यों के लिए प्रमुख प्रभाग है। यही प्रभाग समग्र केन्द्र के लिए सेवा की व्यवस्था करता है जिसमें केन्द्र का हिसाब-किताब रखने और वित्त का प्रबंध करने का काम शामिल है।

(क) कार्मिक

वर्ष 1989-90 केन्द्र की गतिविधियों के सतत विकास तथा विस्तार का वर्ष रहा। न्यास की सेवा में कार्यरत अधिकारियों तथा कर्मचारियों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई। वर्ष 1989-90 के अंत में न्यास के सेवा में कार्यरत कर्मचारियों की संख्या 157 थी जो 1990-91 के अंत तक बढ़ कर 222 हो गई। प्रशासन, फ़ोटोग्राफी, कला दर्शन जैसे विभिन्न अनुभागों में विभिन्न स्तरों पर अतिरिक्त कर्मचारियों की नियुक्ति की गई।

(ख) आपूर्ति तथा सेवाएं

जैसा कि पिछली रिपोर्ट में कहा गया था, गत वर्ष एक सर्वांगपूर्ण आपूर्ति एवं सेवा शाखा स्थापित की गई थी। इस वर्ष उसे सबल एवं सुव्यवस्थित किया गया ताकि वह केन्द्र के विभिन्न अकादमिक प्रभागों की मांगों को पूरा कर सके और 'काल' विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के भारी कार्यभार को संभाल सके।

(ग) वाराणसी में शाखा कार्यालय

वाराणसी स्थित शाखा कार्यालय, जो गत वर्ष स्थापित किया गया था, के कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि की गई। उसके तदर्थ कर्मचारियों को केन्द्र की नियमित सेवा में लेकर उन्हें नियमित वेतनमान दिए गए।

(घ) वित्त एवं लेखे

31 मार्च, 1990 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के वार्षिक लेखों को न्यास द्वारा अपने घोषणा विलेख के अनुच्छेद 1991 के अनुसार अनुमोदित और स्वीकृत किया गया। 31 मार्च, 1991 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लेखों की लेखापरीक्षकों द्वारा जांच की जा रही है।

केन्द्र ने सतत प्रयत्नशील रह कर भारत सरकार से निम्नलिखित लाभ प्राप्त करने के लिए अधिसूचनाएं जारी करवाईं :—

(i) न्यास की आय को, आयकर अधिनियम की धारा 10 (23 ग) (4) के अंतर्गत, निर्धारण वर्ष 1990-91 और 1991-92 के लिए भी आयकर से मुक्त कर दिया गया है।

(ii) सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के लिए केन्द्र को दी गई कोई भी राशि, आयकर अधिनियम के अंतर्गत निर्मित नियम-6 के साथ पठित उसी अधिनियम की धारा 35 (1) (iii) के अंतर्गत दावा की आय में से कटौती की पात्र होगी।

आयकर अधिनियम के अंतर्गत इस छूट की पूर्वपीठिका के रूप में, केन्द्र को विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा 31

मार्च, 1992 तक के लिए एक अनुसंधान संस्था के रूप में मान्यता दी गई है। इस मान्यता के आधार पर केन्द्र को अन्य बातों के साथ-साथ आयात पर सीमा शुल्क से छूट मिल सकती है और आयात प्रक्रियाओं में सुविधा प्राप्त होती है।

(iii) केन्द्र को किसी कलाकृति, पाण्डुलिपि, रेखाचित्र, चित्रकारी, छायाचित्र, मुद्रण आदि की बिक्री से किसी व्यक्ति को होने वाले पूंजीगत लाभ आयकर अधिनियम की धारा 47 (ix) के अंतर्गत निर्धारण वर्ष 1994-95 तक के लिए आयकर से मुक्त कर दिए गए हैं।

(ङ) आवास

केन्द्र अपने कार्यालयों के लिए नियमित कार्योपयुक्त भवनों के अभाव में सेंट्रल विस्टा मेस भवन और संख्या 3 व 5 डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रोड पर स्थित भवनों में उपलब्ध स्थान का सर्वोत्तम उपयोग करता रहा। आने वाले परंपरानिष्ठ पंडितों तथा विद्वानों को नियमित रूप से ठहराने के लिए केन्द्र के पास उपलब्ध एक एशियाड फ्लैट में व्यवस्था की गई है।

(च) शोधवृत्ति योजना

वर्ष 1989-90 में बनाई गई शोधवृत्ति योजना चालू रही। आलोच्य वर्ष में, छः शोधवृत्तियां दी गई — एक वरिष्ठ अध्येता को और पांच कनिष्ठ अध्येताओं को। इनमें से एक वरिष्ठ अध्येता और एक कनिष्ठ अध्येता कला निधि प्रभाग के अंतर्गत, राजकीय प्राच्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय, मद्रास में केन्द्र की माइक्रोफिल्म बनाने की परियोजना पर कार्यरत हैं। शेष चार अध्येता केन्द्र के मुख्यालय में विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं — दो कलाकोश प्रभाग में और दो जनपद संपदा प्रभाग में।

(छ) भवन परियोजना

केन्द्र के लिए एक स्थायी भवन समूह बनाने के लिए भारत सरकार ने सेंट्रल विस्टा में लगभग 23 एकड़ जमीन दी और 100 करोड़ रुपए की राशि मंजूर की। एक अंतर्राष्ट्रीय डिजाइन प्रतियोगिता के माध्यम से एक अमेरिकी वास्तुविद श्री राल्फ लर्नर को चुना गया। केन्द्र की आवश्यकताओं के अनुरूप भवनों का निर्माण कराने के लिए सरकार ने भवन समूह के निर्माण का कार्य इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास को ही सौंपने का निर्णय लिया। तदनुसार न्यास ने इस प्रयोजन के लिए सक्षम एक समिति, अर्थात् भवन परियोजना समिति बनाई। श्री आबिद हुसैन इस समिति के अध्यक्ष और श्री के.डी. बाली इसके सदस्य सचिव नियुक्त किए गए। संयुक्त राज्य अमेरिका में भारत के राजदूत नियुक्त हो जाने पर श्री आबिद हुसैन ने भवन परियोजना समिति की अध्यक्षता छोड़ दी। तदुपरांत श्री प्रकाश नारायण ने 23 नवम्बर, 1990 को भवन परियोजना समिति की अध्यक्षता ग्रहण की। श्री बसंत कुमार ने 1 जनवरी, 1991 को श्री के.डी. बाली से सदस्य सचिव का कार्यभार संभाला। निर्माण-पूर्व की बहुत सी औपचारिकताओं को पूरा किए जाने के बाद अब परियोजना का कार्य उस अवस्था में पहुंच चुका है जब भौतिक निर्माण कार्य शीघ्र प्रारंभ होने की आशा की जा सकती है।

वास्तुविद् द्वारा 1989 में प्रस्तुत परियोजना की लागत का अनुमान लगभग 150 करोड़ रुपए था। सशक्त समिति के रूप में भवन परियोजना समिति ने निर्णय लिया है कि अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर अत्यंत कठिन आर्थिक स्थिति को देखते हुए भारत सरकार द्वारा स्वीकृत 100 करोड़ रुपए की सीमा के भीतर ही परियोजना को विकसित कर लिया जाए और इसके लिए वास्तुविद की सिफारिशों में से कुछ महत्वपूर्ण बातों को चुन कर परियोजना के स्वतः पूर्ण प्रथम चरण की रूपरेखा तैयार कर ली जाए। यह चरण (i) स्वतः फलदायक होगा और केन्द्र के कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करेगा, और (ii) बाद में साधन उपलब्ध होने पर हाथ में लिए जाने वाले चरण या चरणों के साथ भलीभांति जुड़ सकेगा।

टाटा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड को निर्माण प्रबंध अधिकरण के रूप में चुना गया है। इस एजेंसी ने काम शुरू कर दिया है। केन्द्र ने निश्चय किया है कि सर्वप्रथम कलानिधि-कलाकोश भवन का निर्माण प्रारंभ किया जाए।

वास्तुविद ने संकल्पना अवस्था के नक्शे तैयार कर लिए हैं और उन पर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से न्यास द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से उन्हें अवगत करा दिया गया है। वास्तुविद ने अब (जनवरी 1991 के तीसरे सप्ताह में) तदनुसार संशोधित नक्शे पेश किए गए हैं। वर्ष 1991-92 में निर्माण कार्य भौतिक रूप से शुरू हो जाने की आशा है।

(ज) अंतर्राष्ट्रीय संवाद

I. द्विपक्षीय : कलानिधि प्रभाग के कार्यक्रमों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत प्राप्त हुई वस्तुओं का उल्लेख किया जा चुका है। जैसा कि वहां कहा गया था, लाहौर संग्रहालय से प्राप्त सिक्कों तथा चित्रकारियों की सूची वाले प्रकाशनों के अतिरिक्त, जापानी कला, स्थापत्य, चित्रकारी तथा बागवानी के क्षेत्र से संबंधित 15 प्रकाशन, कोरिया से संग्रहालय अध्ययन विषयक दो प्रकाशन, पश्चिम नार्वे व्यावहारिक कला संग्रहालय, नार्वेजियन तकनीकी विश्वविद्यालय, नॉर्डनजेल्डस्पे से 23 प्रकाशन, राष्ट्रीय पुरातत्व संग्रहालय, माद्रिद से पांच प्रकाशन और ललित कला संग्रहालय, बोस्टन से चार प्रकाशन प्राप्त हुए।

द्विपक्षीय संपर्क के फलस्वरूप जनपद संपदा प्रभाग भी कुछ इसी प्रकार लाभान्वित हुआ। पुत्तलिकाओं के उपहार भी अनेक देशों से प्राप्त हुए जिनके नाम हैं : अर्जेंटीना, आस्ट्रिया, आस्ट्रेलिया, कनाडा, चिली, मिस्र, इंडोनेशिया, माले, फिलीपीन, रूमानिया, दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, तुर्की, सोवियत संघ और वियतनाम। केन्द्र को सबसे अधिक पुत्तलिकाएं इंडोनेशिया से प्राप्त हुई जो एक विशेष रूप से आयोजित समारोह में इंडोनेशिया के राजदूत डॉ. आई.बी. मंत्र द्वारा भेंट की गई।

केन्द्र ने कार्मिकों के आदान-प्रदान, रिप्रोग्राफिक्स और बहुमाध्यमिक डेटाबेस के विकास में सहयोग के लिए भारत अमेरिका उप-आयोग को कुछ विशेष प्रस्ताव भेजे हैं और ये प्रस्ताव उप-आयोग के विचाराधीन हैं।

केन्द्र के एक प्रोफेसर लोक साहित्य तथा समकालीन विश्व विषयक यूरोपीय परिचर्या में भाग लेने के लिए कीव (सोवियत संघ) गए।

II. बहुपक्षीय : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को देश में कला तथा संस्कृति के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में यूनेस्को तथा यू.एन.डी.पी. से मान्यता प्राप्त हो चुकी है। केन्द्र के 'काल' (समय) विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया। यह संगोष्ठी वास्तव में अन्तर्विषयक तथा अंतरसांस्कृतिक संगोष्ठी थी जिसमें वैज्ञानिकों, मानवशास्त्रियों, कला इतिहासविदों और विभिन्न विषयों/शास्त्रों के अन्य मनीषियों ने भाग लिया। यूनेस्को ने आंशिक वित्तपोषण के रूप में इस कार्यक्रम में सहयोग दिया।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने हांगकांग में नृत्य विद्या का भविष्य और नृत्य का स्वरांकन जैसे मुख्य विषयों पर जुलाई, 1990 में आयोजित पांचवें अंतर्राष्ट्रीय नृत्य सम्मेलन में भाग लेने के लिए सदस्य सचिव की विदेश यात्रा को प्रायोजित किया। होनोलुलु (हवाई) स्थित पूर्व-पश्चिम केन्द्र के निमंत्रण पर सदस्य सचिव ने अगस्त, 1990 में "आत्मा और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति" विषय पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया। यह सम्मेलन विशेष रूप से चीन, भारत तथा जापान पर केन्द्रित था, हालांकि यूरोप तथा पश्चिम पर भी लेख आदि प्रस्तुत किए गए। अगस्त, 1990 में सदस्य सचिव ने "विश्व नृत्य के क्षेत्र में अवश्यकरणीय कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर एक नजर" (लुकिंग एट क्रिटिकल इंपेरटिव्ज इन वर्ल्ड डांस) विषय पर आयोजित सम्मेलन में भाग लेने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका का दौरा किया। अपने इस प्रवास के दौरान उन्होंने विभिन्न विषयों/शास्त्रों के विशेषज्ञों से विचार-विमर्श किया और वेस्ट कोस्ट में, विशेष रूप से अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, जीरोक्स पार्क और लॉस एंजेलिस के पॉल गेट्टी केन्द्र में बहुमाध्यमिक डेटाबेसों के संबंध में चल रही परियोजनाओं से अपने आप को अवगत कराया।

सदस्य सचिव ने दुनहुआंग अकादमी और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के बीच संस्थागत सहयोग स्थापित करने के लिए अक्टूबर, 1990 में दुनहुआंग की तीसरी अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में हिस्सा लिया। सहयोग के निम्नलिखित क्षेत्रों का पता लगाया गया :—

(क) अक्टूबर-नवम्बर, 1991 में किसी समय, केन्द्र में दुनहुआंग गुफा चित्रों की प्रतिकृतियों तथा प्रतिलिपियों की प्रदर्शनी की भेजवानी करना,

(ख) केन्द्र तथा दुनहुआंग अकादमी के बीच प्रकाशनों का आदान-प्रदान,

(ग) भारतीय लेखकों के निबंधों का दुनहुआंग अकादमी की पत्रिका में प्रकाशन और चीनी विद्वानों के लेखों का भारतीय कला पत्रिकाओं में प्रकाशन,

(घ) कुछ पारस्परिक दिलचस्पी की चीनी पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद और भारतीय कला पर भारतीय लेखकों द्वारा अंग्रेजी में लिखी गई पुस्तकों का चीनी भाषा में अनुवाद, और

(ङ) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और दुनहुआंग अकादमी के बीच विद्वानों का आदान-प्रदान।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक भारत सोवियत अध्ययन कक्ष स्थापित करने के लिए प्रारंभिक कारवाई की जा चुकी है। उपयुक्त कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाने के लिए एक अवैतनिक परामर्शदाता प्रो. माधवन के. पलट को नियुक्त किया गया है। भारतीय विद्वानों के लिए रुचिकर सोवियत संस्थाओं से संबंधित सामग्री को मूल या अनुलिपि के रूप में प्राप्त करने के लिए उसका पता लगाया जा रहा है। सह-प्रकाशन का एक कार्यक्रम चलाने के लिए बातचीत चल रही है।

केन्द्र के बहुविषयक कार्यक्रमों को सहारा देने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए एक परियोजना के प्रस्ताव को यू.एन.डी.पी. की प्रारंभिक सहायता से अंतिम रूप दिया जा रहा है, यह कार्य अब समाप्त होने वाला है।

वर्ष 1990-91 की उल्लेखनीय घटनाओं की तालिका, केन्द्र के विभिन्न प्रभागों के अधिकारियों की सूची, केन्द्र के प्रकाशनों की सूची और फिल्मों, वीडियो प्रलेखों और अभिलेखागारीय संग्रहों की सूची अनुबंध — 1, 2, 3, और 4 के रूप में संलग्न है।

अनुबंध-1

1990-91 की उल्लेखनीय घटनाओं की तालिका

1.	सांस्कृतिक स्रोत सूचना एवं बहुमाध्यमिक प्रलेखन विषय पर कार्यशाला	:	8-9 जून, 1990
2.	महामहिम डॉ. आई.बी. मंत्र द्वारा इन्दिरागांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को इंडोनेशिया की वायांग कुलित पुत्तलिकाओं और वाद्य यंत्रों का भेंट समारोह	:	11 जून, 1990
3.	अंतर्राष्ट्रीय पुत्तलिका विशेषज्ञों के दल का केन्द्र में आगमन	:	7 व 8 सितम्बर, 1990
4.	डॉ. राजा एमन्ना द्वारा 'काल' संगोष्ठी का उद्घाटन	:	20 नवम्बर, 1990
5.	उमायलपुरम शिवरामन, पंडित बिरजू महाराज और उनकी मंडली द्वारा प्रस्तुत "टाइम रिदम" कार्यक्रम	:	20 नवम्बर, 1990
6.	प्रो. सैयद हुसैन नस्र, आचार्य इस्लामिक अध्ययन, जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा धर्म और पर्यावरण संकट : एक प्राच्य दृष्टिकोण विषय पर भाषण	:	21 नवम्बर, 1990
7.	हेनिंग स्टेगमूलर और गुंथर सोनथाइमर द्वारा 'वारि — एक भारतीय तीर्थयात्रा' पर फिल्म	:	22 नवम्बर, 1990
8.	श्री पी.वी. नरसिंह राव द्वारा 'काल' संगोष्ठी में भाग लेने आए प्रतिनिधियों का इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली में स्वागत। श्री राजीव गांधी, डॉ. कर्णसिंह और अन्य महानुभाव भी उपस्थित थे	:	24 नवम्बर, 1990
9.	मणिपुरी जागोई मारुप मंडली, इम्फाल के कलाकारों द्वारा 'महारास' का कार्यक्रम	:	24 नवम्बर, 1990
10.	कुमार शाहनी द्वारा 'ख्याल गाथा' संगीत पर फिल्म	:	25 नवम्बर, 1990
11.	परमपावन दलाई लामा द्वारा 'काल' संगोष्ठी में समापन भाषण	:	26 नवम्बर, 1990
12.	प्रो. पीटर पैक द्वारा रचित एवं प्रस्तुत 'हीयर इंडिया' नामक ध्वनि कार्यक्रम	:	28 नवम्बर, 1990
13.	श्री माइकेल मेस्के, निदेशक, राष्ट्रीय स्वीडिश पुत्तलिका रंगशाला एवं मेरियोनेट म्यूजियम (स्वीडन) का दौरा	:	4 नवम्बर से 10 दिसम्बर, 1990 तक
14.	श्री कृष्णकुट्टी पुलवार द्वारा पुत्तलिका रंगशाला का उद्घाटन एवं कार्यक्रम प्रस्तुति	:	8-10 दिसम्बर, 1990
15.	एम. निकोल रेवल, अनुसंधान निदेशक सी.एन.आर.एस. पेरिस द्वारा "दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के गौरव ग्रंथों तथा पुराणकथाओं के तुलनात्मक अध्ययन की परियोजनाओं की प्रस्तुति" विषय पर वार्ता	:	8-10 दिसम्बर, 1990
16.	समय विषय पर 'काल' नामक बहुमाध्यमिक प्रस्तुति	:	28 दिसम्बर, 1990 से फरवरी, 1991 तक
17.	पुस्तकालय दिवस (बसंत पंचमी)	:	21 जनवरी, 1991
18.	यूनानी पुत्तलिका के वीडियो प्रदर्शन के द्वारा वीडियोशाला का उद्घाटन	:	31 जनवरी, 1991
19.	प्रो. तान चुंग द्वारा चीनी भारतीय अध्ययनों के महत्व पर वार्ता	:	18 फरवरी, 1991

20.	महाराष्ट्र के पिंगुलिकुडल गांव के कलाकारों द्वारा (कलासूत्री बाहुल्ये) रस्सी वाली कठपुतलियों का खेल	:	26 फरवरी, 1991
21.	"ईस्टर के महत्व" पर रेव. रोजर एच. हुकर की वार्ता	:	28 फरवरी, 1991
22.	यूनेस्को द्वारा प्रस्तुत "बोरोबुदुर" फिल्म का प्रदर्शन	:	22 मार्च, 1991
23.	'रामायण के कुछ पक्ष' विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय के सतपाल नारंग की वार्ता	:	25 मार्च, 1991

अनुबंध-2

अधिकारियों की सूची

डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन, सदस्य सचिव

कला निधि प्रभाग

कलानिधि (क)

1. डॉ. टी.ए.वी. मूर्ति, — पुस्तकालयाध्यक्ष
2. श्री आत्म प्रकाशन गाखड़, — उप पुस्तकालयाध्यक्ष
3. श्री बेअन्त कृष्ण रामपाल, — वरिष्ठ अनुलिपिक अधिकारी
4. श्री अशोक कुमार भटनागर, — अनुलिपिक अधिकारी
5. श्री ऋषि पाल गुप्ता, — प्रशासन अधिकारी

कलानिधि (ख)

6. डॉ. बी.सी. कैले, — प्रभारी अधिकारी, कम्प्यूटर कक्ष

कलानिधि (ग)

7. (कु.) सरस्वती स्वामिनाथन, — अनुसंधान अधिकारी

कलानिधि (घ)

8. प्रो. तान चुंग, — अवैतनिक परामर्शदाता (भारत-चीनी सेल)
9. प्रो. एम. पालत, — अवैतनिक परामर्शदाता (भारत-रूसी सेल)

कलाकोश प्रभाग

मुख्यालय

1. डॉ. संपतनारायण, — समन्वयकर्ता
2. डॉ. ललित मोहन गुजराल, — परामर्शदाता
3. डॉ. चन्द्रभान पाण्डेय, — सम्पादक
4. श्री मनोहरलाल चोपड़ा, — परामर्शदाता
5. डॉ. नारायण दत्त शर्मा, — अनुसंधान अधिकारी
6. श्री शुभदत्त डोगरा, — सहायक सम्पादक
7. श्री रामगोविन्द मुखोपाध्याय, — प्रशासन अधिकारी

वाराणसी कार्यालय

1. डॉ. बेट्टिना बौमर, — अवैतनिक समन्वयकर्ता
2. पं. हेमेन्द्रनाथ चक्रवर्ती, — प्रधान पण्डित
3. डॉ. (कु.) सुषमा पाण्डेय, — अनुसंधान अधिकारी
4. डॉ. (कु.) उर्मिला शर्मा, — अनुसंधान अधिकारी
5. डॉ. सुकुमार चट्टोपाध्याय, — अनुसंधान अधिकारी

जनपद संपदा प्रभाग

1. प्रो. वैद्यनाथ सरस्वती,	अनुसंधान प्रोफेसर
2. (कु.) कृष्णा दत्त,	समन्वयकर्ता
3. डॉ. कनक मोतल,	अनुसंधान अधिकारी
4. डॉ. अजय प्रताप,	अनुसंधान अधिकारी
5. श्री राम गोविन्द मुखोपाध्याय,	प्रशासन अधिकारी

कला दर्शन प्रभाग

1. श्री वसंत कुमार,	संयुक्त सचिव
2. श्री श्यामल कृष्ण सरकार,	कार्यक्रम निदेशक

सूत्रधार प्रभाग

1. श्री सत्यपाल जोशी,	संयुक्त सचिव
2. श्री वी. रघुराम अय्यर,	निदेशक, सूचना एवं जनसंपर्क
3. श्री एम. वेंकटेश्वर अय्यर	निदेशक
4. श्री सिंह राज जयरथ,	मुख्य लेखा अधिकारी
5. श्री सुदर्शन कुमार अरोड़ा,	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
6. श्री ओमप्रकाश गोयिल,	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
7. श्री रतन चन्द्र सूद,	प्रशासन अधिकारी
8. श्री ओम प्रकाश रेहान,	प्रशासन अधिकारी

अनुबंध-3

प्रकाशनों की सूची

1. *कलातत्वकोश, खण्ड 1,* संपादक : डॉ. बेट्टिना बौमर,
2. *कलातत्वकोश, खण्ड 2,* संपादक : डॉ. बेट्टिना बौमर
3. *मात्रालक्षणम्,* संपादक : डॉ. वायने हावार्ड
4. *दत्तिलम्,* संपादक : डॉ. मुकुन्द लाठ
5. *द थाउजैंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर,* लेखक : डॉ. लोकेशचन्द्र
6. *सिलेक्टेड लैटर्स ऑफ आनन्द के. कुमारस्वामी,* संपादक : एलविन मूर जूनियर और राम पी. कुमारस्वामी
7. *राम लेजंड एंड राम रिलीफ्स इन इंडोनेशिया,* लेखक : विलियम स्टटरहाइम
8. *वॉट इस सिविलाइजेशन,* लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
9. *टाइम एंड ईटर्निटी,* लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
10. *टाइम एंड ईटर्नल चेंज,* लेखक : प्रो. जे.एम. मेलविले
11. *इस्लामिक आर्ट एंड स्पिरिच्युअलिटी,* लेखक : सैयद हुसैन नस्र
12. *प्रिंसिपल्स ऑफ कॉम्पोजिशन,* लेखक : एलिस बोनर
13. *सिलेक्टेड लैटर्स ऑफ रोमां रौलां,* संपादक : मि. फ्रांसिस डोर एवं मैरी लौरे प्रेवॉस्ट
14. *राबारी : ए पेस्टोरल कोम्युनिटी ऑफ कच्छ,* लेखक : फ्रांसिस्को डि ओराजो फ्लावोनो
15. *कॉन्सेप्ट ऑफ स्पेस : एन्शिएंट एंड मॉडर्न,* संपादक : डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन

चित्र पोस्टकार्ड — प्रथम श्रृंखला

1. इंडियन पिजन्स एंड डव्ज़
2. हिमालय पर्वत शालाओं की दृश्यावली
3. भीमबेटका के शैल चित्र
4. ब्रूनर की चित्रकारियां

चित्र पोस्टकार्ड — द्वितीय श्रृंखला

1. दि इंडियन पिजन्स एंड डव्ज़
2. दि बर्ड्स् ऑफ पैराडाइज
3. दि कैलिको पैंटिंग एंड प्रिंटिंग
4. भारत में प्राचीन स्थापत्य कला

अनुबंध-4

फिल्मों, वीडियो प्रलेखों और अभिलेखागारीय संग्रहों की सूची

क. वीडियो प्रलेखन

1. श्रीमती माणिक्यम्मा शास्त्रि द्वारा अध्यात्मक रामायण के श्लोकों का अभिनय
2. कूडियअट्टम में गुरु अम्मनूर माधव चाकियार का अभिनय
3. मोहिनीअट्टम में श्रीमती कलामंडलम् कल्याणिकुट्टी अम्मा का अभिनय
4. भरतनाट्यम् की पंडनल्लूर शैली में गुरु सुब्बाराय पिल्लै का प्रदर्शन भाषण
5. एल.बी.टी., भोपाल द्वारा प्रस्तुत रामायण नृत्य नाटिका
6. सोज़ और सलाम
7. छम नृत्य
8. शैल कला — चंबल घाटी
9. सोम यज्ञ
10. मणिपुर का ताई हरौबा

ख. प्रदर्शनियों का प्रलेखन

1. रंग प्रदर्शनी
2. आकार प्रदर्शनी
3. काल : बहु-माध्यमिक प्रस्तुति

ग. अभिलेखागारीय संग्रह

1. भारत के वाद्य यंत्रों का कृष्णस्वामी संग्रह
2. फोटोग्राफों का राजा लाला दीनदयाल संग्रह
3. फोटोग्राफों का कार्टियर — ब्रेज़ों संग्रह
4. कला वस्तुओं का लान्स डेन संग्रह